कार्यशील ईमान

प्रेरितों के काम की क़िताब का एक रूहानी सफ़र

Jesus.net

सलाम!

प्रेरितों के काम की क़िताब महज़ अतीत का इतिहास नहीं, बल्कि ख़ुदा के उस ज़िंदा कार्य की गवाही है जिसकी शुरुआत एक छोटे-से समूह से हुई, और जो दुनिया के कोने-कोने तक पहुँची, और आज भी बेरोक गति से आगे बढ़ रही है।

इस क़िताब में यीशु मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद के क़िस्से दर्ज हैं। इसमें बुलंद ईमान, अद्भुत चमत्कारों, बदली हुई ज़िंदगियों और अनेक आज़माइशों का ज़िक्र किया गया हैं। साथ ही, हम ये भी देखते हैं कि कैसे पवित्र आत्मा सामर्थ्य के साथ उतर आता है और प्रारंभिक कलीसिया को बदल देता हैं। इन सभी कहानियों से एक सच्चाई स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है: **ख़ुदा साधारण लोगों के ज़रिए असाधारण कार्य करता है।** और यह महज़ इतिहास नहीं है बल्कि एक न्योता है।

जब आप **Jesus.net द्वारा तैयार की गई इस पढ़ने की योजना को पढ़ेंगे,** तो सिर्फ़ इस बात पर ग़ौर न करें कि ख़ुदा ने अतीत में क्या किया था बल्कि अपने दिल को इस संभावना के लिए भी खोलें कि वह आज आपकी ज़िंदगी में और आपके ज़रिए क्या करना चाहता है।

आप भी इस कहानी का हिस्सा हैं! क्या आप इसमें शामिल होना चाहेंगे?

Cameron and Jenny Mendes

कॅमरॉन और जेनी मेंडीस: चमत्कार हर दिन के लेखक

प्रेरितों के काम की क़िताब: एक झलक में।

लुका की क़िताब का लेखक लुका ख़ुद हैं, जिसमें उसने बड़े ध्यान से यीशु मसीह की ज़िंदगी, क्रूस की क़ुर्बानी, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बारे में लिखा है।

लेकिन यह भी मुमक़िन हैं कि, लूका ने एक और क़िताब लिखी हैं, जो हम 'प्रेरितों के काम' के नाम से जानते हैं। इसमें हम देखते हैं कि **किस तरह पवित्र आत्मा के ज़रिए, यीशु मसीह का कार्य आज भी हर तरफ़ जारी है।**

यह क़िताब उस ख़ास पल से शुरू होती है जब पुनरुत्थान के बाद, यीशु मसीह अपने चेलों से फ़िर मुलाक़ात करता है। चालीस दिनों तक वह उनसे ख़ुदा के राज्य और उस नई दुनिया के बारे में बात करता हैं, जो उसकी क़ुर्बानी और पुनरुत्थान के ज़रिए शुरू हुई। बाहर जाकर सेवा करने से पहले, **यीशु मसीह अपने चेलों को इंतज़ार करने के लिए कहता हैं** क्योंकि वह चाहता था कि उन्हें पवित्र आत्मा का सामर्थ और उसकी क़ुव्वत मिले जिससे वे उसके गवाह बन सकें।

आदेश साफ़ था: यरूशलेम से शुरुआत करें, फ़िर यहूदिया और सामरिया तक बढ़े और आख़िरकार पूरी दुनिया में फ़ैल जाए।

इस क़िताब में यही होते हुए नज़र आता है। सुसमाचार तेज़ी से फ़ैलता है।

हर तरफ़ **परिवर्तन हो रहा हैं** और एक नई पीढ़ी तैयार हो रही हैं जो यीशु मसीह के वचनों के मुताबिक़ चल रही हैं। यह क़िताब दिखाती है कि यीशु मसीह का कार्य उसके स्वर्गारोहण पर ख़त्म नहीं होता है, बल्कि आज भी, लोगों के ज़रिए आगे बढ़ रहा हैं।

और उन लोगों में आप
और हम भी शामिल हैं।

क्या आप अपने इनबॉक्स में रोज़ाना बाइबल से प्रेरणादायक संदेश पाना चाहते हैं?

१ ताक़त के इंतज़ार में।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय १

प्रेरितों के काम की क़िताब का पहला अध्याय एक नई शुरुआत का एहसास कराता है। पहली आयत में लूका लिखता हैं कि उसकी पिछली क़िताब उन सब बातों के बारे में थी जो यीशु मसीह ने करना और सिखाना शुरू किया था। मूल भाषा में “शुरू किया” शब्द बहुत अहम है, क्योंकि **यीशु मसीह का काम अभी ख़त्म नहीं हुआ था।** पुनरुत्थान के बाद और स्वर्गारोहण से ठीक पहले भी, वह लगातार सिखाता रहा।

चालीस दिनों तक यीशु मसीह अपने चेलों से ख़ुदा के राज्य के बारे में बात करता रहा। लेकिन चेलें अब भी उसे एक दुनियावी और राजनीतिक राज्य समझ रहे थे। वे पूछते हैं, “हे प्रभु, क्या आप इसी समय इस्राइल का राज्य फ़िर से स्थापित करेंगे?” (आयत ६)। यीशु मसीह उनकी नज़र को किसी और अज़ीम बात की ओर मोड़ता है। **ख़ुदा का राज्य तो आएगा, लेकिन वैसा नहीं जैसा वे उम्मीद कर रहे थे।** और उसमें ख़ुद यीशु मसीह नहीं, बल्कि **पवित्र आत्मा की क़ुव्वत के ज़रिए उसके चेलें अहम ज़िम्मेदारी निभाएँगे।**

यीशु मसीह उनसे वादा करता है कि वे सब पवित्र आत्मा की सामर्थ पाएँगे और उसके गवाह बन जाएँगे (आयत ८)। जब वह उन्हें इंतज़ार करने के लिए कहता है, तब वे उम्मीद के साथ दुआ करने लगते हैं।

अक़्सर हम इसके विपरीत करते हैं। हम अपने हिसाब से योजनाएँ बनाते हैं और फ़िर ख़ुदा से उन्हें बरक़त देने के लिए कहते हैं। **लेकिन ख़ुदा का काम, निर्भरता से शुरू होता है।** कलीसिया जोश से नहीं, बल्कि फ़रमाबरदारी से जन्म लेती है, हुनर से नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के भरें जाने से और इंसानी ख़्वाहिश से नहीं, बल्कि दैवी सामर्थ से।

यीशु मसीह हमें पहले उसकी हुज़ूरी में ख़ामोश रहने और ख़ुद को उसकी आत्मा से भरने के लिए न्योता देता हैं और उसी निर्भरता के ज़रिए, सच्चा फ़ल उत्पन्न होता है।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१

ख़ुदा के समय से आगे बढ़ जाना।

आप अपनी ज़िंदगी में किन बातों में ख़ुदा के समय से आगे निकल जाने की क़ोशिश करते हैं?

२

ख़ुदा की ताक़त या आपकी?

क्या आप ख़ुदा की ताक़त का इंतज़ार करने के लिए समय निकालते हैं, या ज़्यादातर अपनी समझ और सोच पर निर्भर रहते हैं?

३

पुराने नियम की भविष्यवाणी।

यीशु मसीह के स्वर्गारोहण से सदियों पहले, नबी दानिय्येल ने इस्राएल के आने वाले राजा के बारे में एक दर्शन देखा था। दानिय्येल ७:१३-१४ पढ़कर उसकी तुलना प्रेरितों के काम १:९-११ से करें।

आप क्या देखते हैं?

क्या आप अपने जवाबों और ख़यालों के बारे में किसी से बात करना चाहते हैं? बेझिझक हमारे किसी ई-कोच से संपर्क करें, यह पूरी तरह मुफ़्त और गोपनीय है!

दुआ: ***"यीशु मसीह, मेरी मदद कर कि मैं तेरे इंतज़ार में रह सकूँ। मुझे पवित्र आत्मा की हिम्मत और ताक़त अता कर, ताकि मैं तेरे कार्य में शामिल हो सकूँ। यीशु मसीह के नाम से आमीन।"***

२ वह आग जो ज़िंदगी बदल देती है।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय २

प्रेरितों के काम के पहले अध्याय में जिस प्रतिज्ञा का इंतज़ार था, वह दूसरे अध्याय में पूरा होता है। जो एक ऊपर के कमरे में दुआ कर रहे विश्वासियों के छोटे-से समूह के साथ शुरू हुआ, वह जल्द ही एक ऐसी रूहानी बेदारी में बदल गया और इतिहास की दिशा बदल गई: **पवित्र आत्मा का भरपूरी से उंडेला जाना।**

पेंटेकॉस्ट के यहूदी पर्व के दौरान, अचानक बहती हुई आँधी-सी गूँज सुनाई देती है। आग की-सी जीभें दिखाई देती हैं, और साधारण लोग उन भाषाओं में बोलने लगते हैं जिन्हें उन्होंने कभी सीखा नहीं था, ऐसे शब्द जो पवित्र आत्मा की सामर्थ और प्रेरणा से निकल रहे थे।

यह देखकर, बाहर मौजूद अलग-अलग देशों से आए लोग यह सुनकर उलझन में पड़ जाते हैं। तब पतरस, बड़ी हिम्मत के साथ यह एलान करता है: **यीशु ही प्रभु और मसीहा हैं।**

यह सुसमाचार सुनकर कई लोगों के दिल गहराई से छू जाते हैं और पतरस उन्हें पश्चाताप, बपतिस्मा और नई ज़िंदगी हासिल करने के लिए न्योता देता है। उसी दिन लगभग ३,००० लोगों ने यीशु मसीह का अनुसरण करने का फ़ैसला किया।

मसीहियों का यह नया समुदाय एक बड़े परिवार की तरह साथ रहने लगा। वे अपनी ज़िंदगी, अपनी दौलत और अपना वक़्त एक-दूसरे के साथ बाँटने लगे और आदर, ख़ुशी और सादगी उनके हर दिन की पहचान बन गई।

प्रेरितों के काम की क़िताब के दूसरे अध्याय से यह सिखने मिलता है कि जब ख़ुदा अपनी रूह उंडेलता है, तब परिवर्तन तय है। यीशु मसीह हमारी ज़िंदगी का मरकज़ बन जाता हैं और ऐसा समुह बनता है जो उसकी मोहब्बत को दुनिया के सामने ज़ाहिर करता है।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१
यहाँ आपको क्या नज़र आता है?
जब आप प्रेरितों के काम आध्याय २ पढ़ते हैं, तब कौन-से लफ्ज़ या वाक्य आपका ध्यान खींचते हैं?

२
आग की निशाना।
निर्गमन १९:१७-१८, गिनती ९:१५ और प्रेरितों के काम २:१-४ में ख़ुदा की आग की तुलना करें। अब आपको क्या नज़र आता है?

३
क्या आप पवित्र आत्मा के लिए खुले मन हैं?
क्या आप ख़ुदा को यह इजाज़त देंगे कि वह आपको बदले, महज़ अंदर से ही नहीं, बल्कि इस बात में भी कि आप दूसरों के साथ कैसे जीते हैं?

४
समाज आज के युग में।
पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ समाज, मेरी ज़िंदगी और मेरे आसपास के लोगों के बीच कैसे नज़र आता है?

आओ मिलकर दुआ करें: ***पवित्र आत्मा, मेरे दिल को भर दें और मेरी मदद कर कि मैं यीशु मसीह को अपनी ज़िंदगी का मरकज़ बनाऊँ। मुझे और हमारें समाज को ऐसा बदल दे कि हम तेरी गवाही बन जाएँ।***

३ मेरे पास जो है, मैं वह तुम्हे देता हूँ।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ३

प्रेरितों के काम आध्याय ३ में हम एक ऐसे इंसान से मिलते हैं जो जन्म से ही लकवाग्रस्त था। उसे हर दिन मंदिर के फाटक पर बैठाया जाता था ताकि वह वहाँ भीख माँग सके। उसकी उम्मीद छोटी थी: इतना कि उससे दिन का गुज़ारा हो जाए: बस एक सिक्का।

फ़िर पतरस और यूहन्ना वहाँ से गुज़रते हैं। जब वह आदमी उनकी तरफ़ देखता है, तब पतरस कुछ अनोखा कहता है: “मेरे पास चाँदी और सोना नहीं है, लेकिन जो मेरे पास है, वही मैं तुम्हें देता हूँ। **नासरत के यीशु मसीह के नाम से उठ और चल!”** (आयत ६)

फ़िर वहाँ पर एक चमत्कार हुआ। वह आदमी उछलकर खड़ा हो जाता है, चलने लगता है और ख़ुदा की इबादत करने लगता है। जिसकी उसने उम्मीद भी नहीं की थी, वह सच हो जाता है।

यह देखकर सब लोग अचंभित रह जाते हैं। लेकिन पतरस तुरंत लोगों का ध्यान अपनी ओर से हटाकर कहता है कि यह चंगाई हमारी अपनी ताक़त या भक्ति का नतीजा नहीं, बल्कि यीशु मसीह के नाम और सामर्थ का काम है, उसी यीशु मसीह का जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, परन्तु जिसे ख़ुदा ने मरे हुओं में से जिलाया। फ़िर पतरस बेख़ौफ़ होकर लोगों के सामने सच्चाई ज़ाहिर करता है। वह बताता है कि यीशु की मृत्यु में उन सभी लोगों का भाग था, लेकिन साथ ही वह ख़ुदा की असीम रहमत और माफ़ी की उम्मीद भी उनके सामने रखता है। वह उन्हें पुकारकर कहता है: **“पश्चाताप करें और ख़ुदा की ओर मन फ़िराएँ, ताकि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, बेदारी के दिन आएँ, और तुम प्रभु के साथ नई ज़िंदगी जी सकें।”**

इस कहानी में वही हुआ जो यीशु मसीह ने पहले किया: लोगों की कमज़ोरियों और गुनाहों को उजागर करने के साथ साथ, एक नई शुरुआत और पुनर्स्थापना का दरवाज़ा खोल दिया।

कभी-कभी हम भी उस लकवाग्रस्त आदमी की तरह हो जाते हैं। हम छोटी मदद या तुरंत हल माँगते हैं, जबकि ख़ुदा हमें गहराई से पुनर्स्थापित करना चाहता है। हम थोड़ी राहत पर नज़र रखते हैं, जबकि यीशु मसीह हमें उठाकर नई ज़िंदगी देना चाहता हैं।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ आपकी उम्मीद।

क्या आपकी उम्मीदें सिर्फ़ “एक सिक्के” तक सीमित हैं, जबकि ख़ुदा आपको ऐसी नई शुरुआत देना चाहता है जो आपकी पूरी ज़िंदगी की दिशा बदल दे?

२ क्या आपको याद है?

किन ख़ास तरीकों से यीशु मसीह ने आपकी, या आपके जानने वालों की ज़िंदगी बदली है?

३ ख़ुदा के प्रति मेरा रवैया।

क्या आप चाहते हैं, की यीशु मसीह आपकी ज़िंदगी की दर्दभरी सच्चाइयों को भी उजागर करें, ताकि आपको एक नई शुरुआत मिल सकें?

? क्या आप अपने जवाबों और ख़यालों के बारे में किसी से बात करना चाहते हैं? बेझिझक हमारे किसी ई-कोच से संपर्क करें, यह पूरी तरह मुफ़्त और गोपनीय है!

दुआ: ***“यीशु मसीह, मुझे सिखा कि जो मैंने तुझसे पाया है, उसे मैं दूसरों को भी बाँट सकूँ, चाहे वह मेरी नज़र में छोटा ही क्यों न लगे। मुझे अपनी नई शुरुआत का ज़रिया बना, ताकि दूसरे मेरे ज़रिए तुझे पहचान सकें।”***

४ दबाव के बीच हिम्मत।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ४

प्रेरितों के काम अध्याय ३ में हुए चमत्कार और प्रभावशाली प्रचार के बाद, पतरस और यूहन्ना को गिरफ़्तार कर लिया गया। धार्मिक अगुवों की नाराज़गी महज़ उस लंगड़े इंसान की शिफ़ा की वजह नहीं थी, बल्कि इसलिए थी कि जिस यीशु मसीह के नाम को उन्होंने क्रूस के ज़रिये हमेशा के लिए ख़ामोश कर दिया था, वही नाम अब फ़िर से यरूशलेम की गलियों में गूँज रहा था। अगले दिन, पतरस और यूहन्ना को महासभा के उसी अदालत में खड़ा किया जहाँ कुछ ही समय पहले, धार्मिक अगुवों ने यीशु मसीह को दोषी ठहराया था। लेकिन वे दोनों निडर और पवित्र आत्मा से भरपूर थे।

पतरस, बड़ी हिम्मत, दिलेरी और बिना किसी झिझक के एलान करता है कि यह चंगाई, उसी यीशु मसीह के नाम और सामर्थ के ज़रिये मिली है, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था, परन्तु जिसे ख़ुदा ने मरे हुओं में से जिलाया। धार्मिक अगुवों को सबसे अधिक हैरानी इस बात की होती है कि पतरस और यूहन्ना न तो बड़े विद्वान थे और न ही समाज में किसी अहम पद या प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति। फ़िर भी उनमें जो साहस, बुद्धि और अधिकार दिखाई दे रहा था, उसने सबको चकित कर दिया। अंत में उन्हें एक बात को पहचानना ही पड़ा कि ये लोग यीशु मसीह के साथ चले थे।

रिहा होने के बाद, वे न तो शिकायत करते हैं और न ही पीछे हटते हैं, बल्कि वे अपने विश्वासियों के पास लौटते हैं। वे एकजुट होकर, अपनी हिफ़ाज़त या आराम के लिए नहीं, बल्कि अधिक हिम्मत और साहस के लिए दुआ करते हैं। तब एक बार फ़िर वे पवित्र आत्मा से भर जाते हैं और ख़ुदा के कलाम को पहले से भी ज़्यादा सामर्थ और निर्भीडता के साथ सुनाते हैं।

यह घटना हमें याद दिलाती है कि विरोध, ख़ुदा की ग़ैर-मौजूदगी का प्रमाण नहीं होता। अक़्सर दबाव और कठिनाइयों के बीच ही ईमान की असलियत सामने आती है। पतरस और यूहन्ना की हिम्मत उनके अपने आत्म-विश्वास से नहीं, बल्कि यीशु मसीह के साथ उनके गहरे रिश्ते से निकलती थी।

जब आपके ईमान पर दबाव महसूस होता है, तब सवाल यह होना चाहिए कि आप अपनी ताक़त कहाँ से पाएँगे? और जब लोग हमारी ज़िंदगी, हमारे रवैये और हमारे जवाबों को देखेंगे, तब क्या वे यह पहचान पाएँगे कि हम सच में यीशु मसीह के चेले हैं? क्या हमारे बातों से, हमारी मोहब्बत से उसके मौजूद होने की झलक दिखाई देगी?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ **दूसरों के मौजूदगी में मेरा रवैया।**

जब मेरा ईमान दबाव के बीच आता है, तब मैं कैसे जवाब देता हूँ?

२ **क्या लोग देखकर पहचान सकते हैं?**

क्या मेरी बातों और मेरे रवैये से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि मैं यीशु मसीह के वचनों के मुताबिक़ चलता हूँ?

३ **आज के दौर में समाज।**

लुका २२:५४-६२ में, पवित्र आत्मा हासिल करने से पहले, पतरस का अपने पूछताछ करने वालों के प्रति रवैया, और प्रेरितों के काम ४:५-१४ में, पवित्र आत्मा पाने के बाद उसका रवैया, इनकी तुलना करें। और ग़ौर करें कि इसमें कौन सी अलग बात ज़ाहिर होती हैं?

दुआ: ***"ऐ आसमानी पिता, जब मैं दबाव का सामना करूँ, तो मुझे हिम्मत दे। मेरी ज़िंदगी से यह दिखाई दे कि तू मेरे साथ हैं।"***

५ यह मामला गंभीर हैं।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ५

प्रेरितों के काम अध्याय ५ की शुरुआत एक चौंका देने वाली घटना से होती है। अननियास और सफ़ीरा ने अपनी एक ज़मीन बेची और ऐसा दिखावा किया मानो उन्होंने उसकी पूरी रकम कलीसिया को समर्पित कर दी हो, जबकि वास्तव में उन्होंने उसका एक हिस्सा अपने लिए अलग रख लिया था। मसला यह नहीं था कि उन्होंने कुछ अपने पास रखा, बल्कि यह कि उन्होंने झूठ बोला। पतरस साफ़ कहता है कि पैसा उनका ही था, लेकिन वे लोगों की नज़रों में अपने आपको उससे अधिक आत्मिक और समर्पित दिखाना चाहते थे, जितने वे वास्तव में थे। तब पतरस ने उनसे गंभीरता से कहा: ***"तुमने मनुष्यों से नहीं, बल्कि ख़ुदा से झूठ बोला है।"***

इसके बाद जो होता है, वह ज़्यादा संजीदा बात है: दोनों वहीं गिरकर मर जाते हैं और यह देखकर सब लोग डर जाते है। इससे कुछ गंभीर सवाल पैदा होते है। यहाँ, ख़ुदा का इंसाफ़ इतना सीधा और साफ़ क्यों नज़र आता है? उन्हें इतनी सख़्त सज़ा क्यों मिलती है?

हमें यह समझना चाहिए कि उस समय कलीसिया बिल्कुल नई थी और उसकी बुनियाद रखी जा रही थी। ऐसे अहम दौर में, ख़ुदा यह स्पष्ट करना चाहता था कि उसकी कलीसिया की नींव सच्चाई, पवित्रता और ईमानदारी पर रखी जाए। **कलीसिया, धार्मिक दिखावे की जगह नहीं, बल्कि एक ऐसी जगह है जहाँ सच्चाई को अहमियत दी जाती है।**

यह कहानी दिखाती है कि फ़ज़ल कोई आम बात नहीं है। वही आत्मा जो ताक़त देता है, पाक़ भी है। ख़ुदा अपनी कलीसिया महज़ उत्साह पर नहीं, बल्कि सच्चाई और ईमानदारी पर तैयार करता हैं।

इसके बावजूद, इस अध्याय में हम पढ़ते हैं कि चिन्ह और चमत्कार तेज़ी बढ़ते है और कई लोग कलीसिया में दाख़िल भी होते हैं। पवित्र आत्मा का उंडेलना और बेदारी, साथ-साथ चलती हैं।
सवाल यह है: *क्या हम ख़ुदा की ताक़त और सामर्थ को, पाकीज़गी के बिना हासिल करना चाहते हैं?*

ख़ुदा कामिल लोगों को नहीं, ईमानदार दिलों को चाहता है।

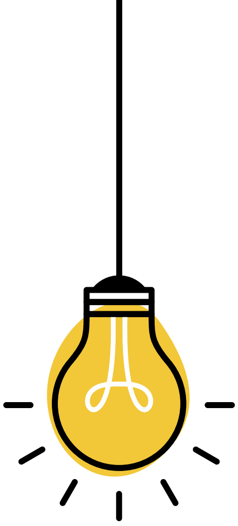

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ (झूठी) पाकीज़गी।

क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे हिस्से हैं, जहाँ आप ख़ुद को जितने हैं उससे ज़्यादा आत्मिक दिखने की क़ोशिश करते हैं?

२ ख़ुदा की पाकीज़गी।

ख़ुदा की पाकीज़गी आपके दिल पर क्या असर करती है? क्या यह आपको बेपरवाह छोड़ देती है, या हैरानी से भर देती है?

३ क्या आप पवित्र आत्मा के लिए खुले दिलवालें हैं?

क्या आप ख़ुदा को आपकी ज़िंदगी में बदलाव लाने देते हैं, सिर्फ़ अंदर से नहीं, बल्कि इस बात में भी कि आप दूसरों के साथ कैसे जीते हैं?

दुआ: ***"ऐ पाक ख़ुदा, मुझे सिखा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और ईमानदारी से कैसे जीऊँ। मुझे हिम्मत दे कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं तेरे प्रति वफ़ादार रहूँ।"***

६ लोगों की परवाह करने वाला दिल।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ६

प्रेरितों के काम अध्याय ६ में, जैसे-जैसे कलीसिया बढ़ती है, तनाव भी सामने आने लगता है। यूनानी विधवाएँ शिक़ायत करते हैं कि उनके साथ रोज़ाना भोजन बाँटने में नाइंसाफ़ी हो रही थी। बढ़ोतरी और बेदारी में बरक़त के साथ-साथ, नई ज़िम्मेदारियाँ और चुनौतियाँ भी साथ आती हैं।

तनाव और चुनौतियों के बीच भी, प्रेरितों ने अपनी प्राथमिकताओं का सही संतुलन बनाए रखा। उन्होंने यह समझा कि उनका मुख्य बुलावा, दुआ और ख़ुदा के क़लाम के प्रचार में लगे रहना था। इसलिए, रोज़मर्रा की ज़िम्मेदारियों को व्यवस्थित ढंग से संभालने के लिए उन्होंने सात ऐसे व्यक्तियों को चुना जो व्यापारिक अनुभव के कारण नहीं, बल्कि इसलिए योग्य ठहराए गए क्योंकि वे "पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण" थे। (प्रेरितों के काम ६:३)

यह हमें बहुत कुछ सिखाता है। **ख़ुदा के राज्य में, व्यवहारिक काम भी आत्मिक काम है** और कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता।

इन सात व्यक्तियों में से एक स्टीफ़न था, जो "ईमान और सामर्थ्य से भरा हुआ" था। उसकी प्रारम्भिक ज़िम्मेदारी भोजन बाँटने की सेवा से जुड़ी थी, लेकिन पवित्र आत्मा की अगुवाई में वह आगे चलकर बड़ी सामर्थ और दलेरी के साथ सुसमाचार का प्रचार करने लगाता हैं।

पवित्र आत्मा से भरी ज़िंदगी न सिर्फ़ मंच पर दिखाई देती है, बल्कि पर्दे के पीछे, ईमानदारी से सेवा करने में ज़्यादा दिखाई देती हैं और असरदार भी होती हैं। पवित्र आत्मा इंसाफ़ देने, ज़रूरतमंदों की देखभाल करने और साधारण सेवा में भी उतना ही काम करता है जितना प्रचार में।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि जब हम कुछ बड़ा करतें हैं, तभी हमारी अहमियत दिखाई देती हैं। लेकिन प्रारंभिक कलीसिया दिखाती है कि **ख़ुदा की ताक़त साधारण और रोज़मर्रा की फ़रमाबरदारी में भी ज़ाहिर होती है।**

और इसका नतीजा? "ख़ुदा का वचन और फ़ैलता गया।" (प्रेरितों के काम ६:७)
जब हर कोई ख़ुदा की सेवा, ईमानदारी और लगन से निभाता है, तब ख़ुदा का राज्य बढ़ता है।

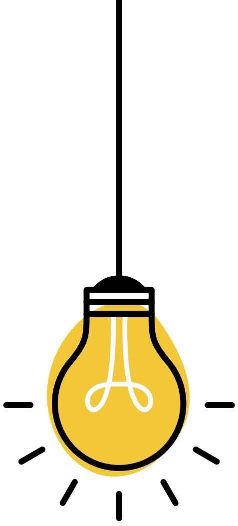

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ जब लोगों में नाइंसाफ़ी या तनाव होता है, तो आप इसका जवाब कैसे देते हैं?

२ क्या आप ख़ुदा की सेवा उन कामों में करने को राज़ी हैं, जो ज़्यादातर नज़र नहीं आते हैं?

३ आज ख़ुदा आपको किस “साधारण” काम में इस्तेमाल कर सकता हैं, जो आत्मिक रूप से अहम है?

दुआ: “ऐ आसमानी पिता, मुझे दिखा कि मैं कहाँ और किसकी सेवा कर सकता हूँ। लोगों के लिए मेरे दिल में अपनी मोहब्बत भर दें और व्यवहारिक कामों के लिए मुझे बुद्धि और अपना फ़ज़ल अता कर।”

७ अंत तक वफ़ादार।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ७

स्टीफ़न, उन्हीं धार्मिक नेताओं के सामने खड़ा था, जिनके सामने इससे पहले पतरस खड़ा हुआ था। लेकिन अपने आपको बचाने के बजाय, वह इस्राएल का पूरा इतिहास बयान करता है। इब्राहीम से लेकर मूसा तक, रेगिस्तान से लेकर मंदिर तक। बार-बार वह दिखाता है **कि ख़ुदा हमेशा वफ़ादार रहा, फ़िर भी लोग उसके ख़िलाफ़ जाते हैं।**

उसकी बातें एक सख्त लेकिन सच्चे नतीजे तक पहुँचती हैं: *"जिस तरह तुम्हारे बाप-दादाओं ने नबियों को ठुकराया, उसी तरह तुमने भी अब उस धर्मी जन को ठुकरा दिया है।"* स्टीफ़न कोई आसान पैग़ाम नहीं देता, बल्कि मोहब्बत और रहमदिली के साथ सच बोलता है।

जब स्टीफ़न यह कहता है कि उसने आसमान खुला हुआ देखा है और यीशु मसीह को ख़ुदा के दाहिने हाथ खड़ा देखा है, तब भीड़ ग़ुस्से से भर जाती है और उनके सब्र का बाँध टूट जाता है। वे उसे शहर से बाहर घसीटकर ले जाते हैं और पत्थरों से पीटते हैं। जब पत्थर उस पर बरस रहे थे, तब उसने दुआ की: "प्रभु यीशु, मेरी रूह को क़ुबूल कर।" (प्रेरितों के काम ७:५९) और फ़िर कहा: "प्रभु, इस ग़ुनाह को इनके खिलाफ़ मत गिनना।" (प्रेरितों के काम ७:६०) **ये हमें उस दुआ की याद दिलाती हैं जो यीशु मसीह ने क्रूस पर की थी।** स्टीफ़न अपनी जान खो देता है, लेकिन उसका पैग़ाम नहीं बदलता।

इसी घटना के दौरान, शाऊल भी उन लोगों के साथ शामिल था जो स्टीफ़न को पत्थर मार रहे थे। उसी ने इस हत्या का समर्थन भी किया था। उस समय, मसीहियों पर ज़ुल्म करने में वह काफ़ी आगे था, लेकिन आगे की कहानी में, वही इंसान जो ख़ौफ़ की वजह बना हुआ था, यीशु मसीह का एक अहम प्रेरित बन जाता है।

ख़ुदा ने इस बेहद दर्दनाक और सदमे से भरी घटना को प्रारंभिक कलीसिया के लिए अटल ईमान, दृढ़ता और वफ़ादारी की सबसे महान गवाहियों में से एक बना दिया। एक दुखद अंत को ख़ुदा ने अपनी महिमा और सुसमाचार की उन्नति के लिए इस्तेमाल किया।
यह हमें याद दिलाता है कि **तकलीफ़ों, विरोध और आँसुओं के बीच भी ख़ुदा कार्य करता रहता है।** वह सबसे कठिन परिस्थितियों को भी अपने उद्देश्य की पूर्ति और अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

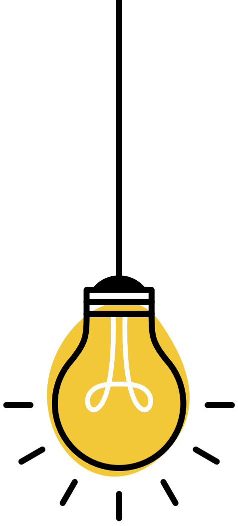

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ आपकी ज़िंदगी के किन हिस्सों में आपको वफ़ादार बने रहने की चुनौती मिलती है, भले ही उसकी कोई क़ीमत चुकानी पड़े?

२ जब आपके साथ नाइंसाफ़ी होती है, तो आपका जवाब क्या होता है?

३ स्टीफ़न ने धार्मिक नेताओं के सख्त दिलों का मुक़ाबला किया। क्या आपकी ज़िंदगी में भी ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आप ख़ुदा की अगुवाई को स्वीकार नहीं करना चाहते?

दुआ: *"ऐ आसमानी पिता, मुझे ऐसा दिल दे जो हर हालातों में तेरे प्रति वफ़ादार बना रहे, चाहे कुछ भी हो जाए। मेरे दिल को नरम कर, प्रभु मेरी नज़र हमेशा तेरी महिमा पर लगी रहे, आमीन।"*

८ सताव के बीच फ़ैलना।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ८

स्टीफ़न की मौत के बाद, विश्वासियों के प्रति भयानक सताव शुरू हुआ। उन्हें घरों से घसीटकर निकाला जा रहा था और इसी वजह से कलीसिया के लोग पूरे यहूदिया और सामरिया में बिख़र गए। ऐसा लग रहा था कि मानो यह प्रारंभिक कलीसिया, घुटन के मारे मर रही थी।

लेकिन जो चीज़ तबाही के लिए थी, उसे ख़ुदा ने बढ़ोतरी के लिए इस्तेमाल किया। "जो लोग बिख़रें हुए थे, वे हर जगह जाकर सुसमाचार सुनाने लगे" (प्रेरितों के काम ८:४)। अध्याय १ में किया हुआ वादा अब स्पष्ट रूप से पूरा होने लगा था: **सुसमाचार यरूशलेम से निकलकर यहूदिया और सामरिया तक फ़ैलने लगा था।**

फ़िलिप्पुस, सामरिया में प्रचार करने लगा, एक ऐसी जगह जहाँ यहूदी आम तौर पर जाना पसंद नहीं करते थे। लेकिन सुसमाचार पुरानी दुश्मनियों की दीवारों को तोड़ रहा था। पूरे नगर में ख़ुशी छाई हुई थी और अशुद्ध आत्माएँ निकल रही थीं। **लोग बंधनों से आज़ाद किए जा रहे थे।**

फ़िर पवित्र आत्मा, फ़िलिप्पुस को एक सुनसान सड़क पर भेजता है जहाँ उसकी मुलाक़ात एक इथियोपियाई दरबारी से होती है, जो यशायाह की क़िताब पढ़ रहा था। एक बातचीत, एक सफ़ाई, एक बपतिस्मा और सुसमाचार अफ़्रीका की ओर फ़ैल गया था।

अध्याय ८ में हम देखते है कि ख़ुदा का काम, विरोध और सताव के सामने नहीं झुकता हैं बल्कि कई बार वह हमारी बिखराव को भी अपनी योजना पूरी करने के लिए इस्तेमाल करता है।

जो बात हमें नुक़सान जैसी लगती है, वही ख़ुदा के हाथों में बढ़ोतरी और बरक़त की वजह बन जाती है। सवाल यह है: जब हमारे मंसूबें टूट जाते हैं, तब क्या हम ख़ुदा की अज़ीम योजनाओं पर भरोसा रखते हैं?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ ख़ुदा की अगुवाई का पालन करते हुए, फ़िलिप्पुस ने उन जगहों पर क़दम रखा जहाँ उसने जाने की शायद उम्मीद नहीं की थी। आपको कैसे महसूस होता है, जब ख़ुदा आपको अपने आराम के दायरे से बाहर निकलने के लिए बुलाता है?

२ इथियोपिया का ख़ोजा दरबारी, पूरे दिल से पवित्र शास्त्र को समझना चाहता था। बाइबल के उन हिस्सों के साथ आप कैसे पेश आते हैं जो आपके समज के परे हैं?

३ अपनी रूहानी ज़िंदगी में आप पवित्र आत्मा की भूमिका को कैसे अनुभव करते हैं? क्या उसकी अगुवाई आपके लिए साफ़ है, या अब भी कुछ धुंधली और अस्पष्ट लगती है?

दुआ: *“ऐ ख़ुदावंद, जब हमारा बिखरा हुआ ध्यान हमें तेरी मौजूदगी से दूर कर देता है, तब हमें अपनी हथेली में समेट ले। आमीन।”*

९ परिवर्तन।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ९

जेब में ख़त लिए हुए, वह डमस्कस की ओर रवाना होता है ताकि "यीशु मसीह" के अनुयायियों को गिरफ़्तार कर सके। उसे यक़ीन है कि वह ख़ुदा की सेवा कर रहा है। उसका जज़्बा सच्चा था, लेकिन तरीक़ा ग़लत।

जब वह रास्ते में ही था, तब आसमान से एक तेज़ रोशनी उस पर पड़ी और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और एक आवाज़ आई: "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है?" (प्रेरितों के काम ९:४) उस तेज़ रोशनी ने शाऊल को अंधा कर दिया। जो इंसान दूसरों को सताने में ताक़तवर था, अब ख़ुद दूसरों पर निर्भर हो गया था। तीन दिनों तक वह अंधेरे में इंतज़ार करता रहा।

यह एक प्रकटीकरण था। **यीशु मसीह ज़िंदा हैं!** और जो कोई उसकी कलीसिया पर ज़ुल्म करता है, वे उस पर भी ज़ुल्म करते हैं।

जब ख़ुदा ने हनन्याह को शाऊल के पास जाने का आदेश दिया, तब उसने स्वाभाविक रूप से विरोध किया। लेकिन ख़ुदा ने हनन्याह से कहा: "शाऊल मेरा चुना हुआ पात्र है।" (प्रेरितों के काम ९:१५)

यहाँ ख़ुदा का फ़ज़्ल ज़ाहिर हुआ। माफ़ी के साथ-साथ ख़ुदा ने, शाऊल को एक बिल्कुल नई बुलाहट दि। शाऊल, अब पौलुस बन गया। एक सतानेवाला, मसीह का चेला बन गया। यह इसलिए नहीं कि वह इसका हक़दार था, बल्कि इसलिए कि मसीह ने उसे अपने लिए चुन लिया।

प्रेरितों के काम अध्याय ९ हमें यह सच्चाई दिखाता है कि कोई भी इंसान ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहमत की पहुँच से बाहर नहीं है। चाहे किसी का अतीत कितना भी अँधेरा क्यों न हो, ख़ुदा की फ़ज़ल उसे नई पहचान और मक़सद दे सकती है। यह अध्याय हमें यह भी सिखाता है कि बुलाहट की शुरुआत अक्सर समर्पण से होती है। जब हम अपनी इच्छा को ख़ुदा की इच्छा के अधीन कर देते हैं, तभी वह हमारी ज़िंदगी को अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करना शुरू करता है। कई बार हम दूसरों पर या स्वयं अपने ऊपर ऐसे ठप्पे लगा देते हैं जिन्हें ख़ुदा बहुत पहले ही तोड़ चुका होता है। जहाँ हम महज़ अतीत देखते हैं, वहाँ ख़ुदा भविष्य देखता है; जहाँ हम असफ़लता देखते हैं, वहाँ वह अपनी फ़ज़ल से एक नई शुरुआत रचता है।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ हनन्याह को शाऊल की मदद करने के लिए अपने डर पर जीत हासिल करनी पड़ी। क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे लोग हैं जिनके बारे में आप सोचते हैं कि वे ख़ुदा से “बहुत दूर” हैं?

२ शाऊल का परिवर्तन पूरी तरह अहम था। आपके ईमान ने आपकी ज़िंदगी को किन तरीकों से बदला है?

३ लोगों में आने वाले बदलाव को आप कैसे देखते हैं? क्या आप भरोसा करते हैं कि कोई शख़्स सचमुच बदल सकता है?

दुआ: *"ऐ यीशु मसीह, मेरा दिल तेरे हाथों में ले और जहाँ मैं ग़लत हूँ वहाँ मुझे बदल दे। मेरी ज़िंदगी को तेरे फ़ज़ल, तेरी रहमत की एक ख़ूबसूरत गवाही बना। आमीन।"*

१० महान योजना।

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय १०

अध्याय १० की कहानी का एक अहम मोड़ आता है। अब तक सुसमाचार ख़ास रूप से सिर्फ़ यहूदियों के बीच फ़ैल रहा था। **लेकिन ख़ुदा की योजना इससे भी ज़्यादा अज़ीम थी।**

एक रोमी अधिकारी, कुरनेलियुस, ख़ुदा का भय मानने वाला शख़्स था जो दुआ करता था, दान देता था और ख़ुदा को खोजता था, लेकिन जिसने अभी तक सुसमाचार नहीं सुना था। उसी समय, पतरस को एक दर्शन मिला जिसमे उसने देखा कि आसमान से एक बड़ी चादर नीचे उतर रही थी, जो उन जानवरों से भरी हुई है जिन्हें यहूदी क़ानून के अनुसार अशुद्ध माना जाता था। तब एक आवाज़ आई: “पतरस उठ, मार और खा।” (प्रेरितों के काम १०:१३) लेकिन पतरस ने इनकार किया। उसने सारी उम्र शुद्ध और अशुद्ध के बीच भेद करना सीखा था। लेकिन ख़ुदा ने जवाब दिया: “जिसे ख़ुदा ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध न कह।” (प्रेरितों के काम १०:१५)

जब पतरस, कुरनेलियुस के घर पहुँचा, तब सारी बातें स्पष्ट हो गईं। ख़ुदा लोगों में कोई भेदभाव नहीं करता है। जब पतरस अभी बोल ही रहा था, तब पवित्र आत्मा वहाँ मोजूद सभी लोगों पर उतर आया, यहाँ तक कि ग़ैर-यहूदियों पर भी। **यह किसी की नस्ल, संस्कृति या धार्मिक पृष्ठभूमि नहीं है जो उसे ख़ुदा के पास आने का अधिकार देती है, बल्कि यीशु मसीह पर ईमान ही वह मार्ग है।**

कई बार हम भी अपने मन में अनदेखी सीमाएँ बनाते हैं, कि कौन क़ाबिल है? कौन शामिल हो सकता है? और कौन नहीं? लेकिन ख़ुदा का दिल हमारी सीमित सोच से कहीं बढ़कर है। कलीसिया कोई बंद घेरा नहीं, बल्कि हर इंसान के लिए खुला न्योता है।

ख़ुदा उन दीवारों और सीमाओं को ढहा देता है जिन्हें इंसानों ने अपने विचारों, पूर्वाग्रहों और परंपराओं से खड़ा किया है।

जहाँ हम भेदभाव और विभाजन देखते हैं, वहाँ ख़ुदा अनुग्रह, मोहब्बत और मेल-मिलाप का मार्ग खोलता है। सवाल यह है: क्या हम तैयार हैं कि ख़ुदा हमारे सोचने के तरीक़े, हमारी धारणाओं और हमारे पूर्वाग्रहों को अपने दिल और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बदल दे? क्या हम उसके नज़रिए को अपनाने के लिए इतने नम्र हैं कि वह हमारी सीमित समझ को तोड़कर हमें अपनी व्यापक योजना का हिस्सा बना सके?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ पतरस ने सीखा कि उसे किसी भी इंसान को अशुद्ध नहीं समझना चाहिए। क्या ऐसे लोग या समूह हैं जिनसे आप दूरी बनाए रखते हैं?

२ क्या आप अपने ईमान को ख़ुदा के ज़रिए बढ़ाने के लिए तैयार हैं?

३ पतरस, कुरनेलियुस के आदमियों के साथ यह जाने बिना चल पड़ा कि आगे क्या होने वाला है। क्या आप भी बिना सब कुछ जाने, ख़ुदा की आज्ञा मानने का साहस रखते हैं?

४ इससे पहले कि पतरस अपना संदेश पूरा करे, पवित्र आत्मा, उन लोगों पर उतर आया। जब ख़ुदा आपकी योजनाओं के अनुसार काम नहीं करता, तो आपका जवाब क्या होता है?

दुआ: *"ऐ ख़ुदावंद, हमारे दिलों में बनी हुई हर दीवार को गिरा दे, चाहे वह दिखाई देती हो या छिपी हुई हो, चाहे हमें उसका एहसास हो या न हो। हमें उस आज़ादी में जीना सिखा जो तूने हमें यीशु मसीह के ज़रिए दी है। आमीन।"*

११ एक नया नाम

पढ़ें: प्रेरितों के काम आध्याय ११

प्रेरितों के काम अध्याय ११ में, कुरनेलियुस के साथ जो हुआ था, उसे फ़िर से बताया जाता है (कुछ बातें तो तीन बार तक दोहराई गई हैं!) ताकि इस बात पर ज़ोर दिया जाए कि यहाँ ख़ुदा की योजना में एक बहुत अहम मोड़ आ रहा है। ठीक वैसे ही, जैसे शाऊल के मन-फिराव के मामले में हुआ था, वैसे ही यह भी प्रेरितों के काम की एक मुख्य घटना थी: गैर-यहूदियों का आधिकारिक रूप से ख़ुदा की कलीसिया में स्वागत किया जाना।

यह खबर तेज़ी से फ़ैल रही थी कि गैर-यहूदी लोग भी सुसमाचार को अपना रहे थे और कलीसिया में शामिल हो रहे थे। लेकिन हर कोई इस बात से ख़ुश नहीं था। कई मसीही अब भी ईसाई धर्म को यहूदी धर्म से भटका हुआ मान रहे थे और उन्हें यह स्वीकार करना मुश्किल लग रहा था कि ख़ुदा, यहूदी धर्म के दायरे से बाहर भी कार्य कर सकता हैं। उन्हें यह मानना मुश्किल लग रहा था कि खतना न किए हुए लोग भी ख़ुदा के परिवार का हिस्सा बन सकते हैं।

पतरस का मज़ाक उड़ाया गया था क्योंकि वह गैर-यहूदियों के घरों में गया था और उसने उनके साथ भोजन भी किया था (जो उनके सोच और क़ानून के ख़िलाफ़ था)। तब पतरस ने समझाया कि पवित्र आत्मा उन लोगों पर भी उसी प्रकार उतरा था, जैसे शुरूआत में उन पर उतरा था। उसका परिणाम बहुत सरल और विनम्र था: “मैं कौन हूँ, जो ख़ुदा के काम और तरीकों में रुकावट ला सकता हूँ?” (प्रेरितों के काम ११:१७) **पतरस ने स्वीकार किया कि ख़ुदा और उसका कार्य, उसकी परंपराओं से बड़ा, और समझ से परे था।**

उधर अन्ताकिया में भी एक नई कलीसिया बढ़ रही थी, जिसमें यहूदी और यूनानी दोनों शामिल थे। बरनबास को यह देखने के लिए भेजा गया कि वहाँ क्या हो रहा है। लेकिन जब उसने ख़ुदा के फ़ज़्ल को काम करते देखा, तब वह ख़ुश हुआ और सबको प्रोत्साहित किया कि वे ख़ुदावंद के प्रति वफ़ादार बने रहें। इसी अन्ताकिया नगर में पहली बार चेलों को “मसीही” कहा गया। मुमक़िन है कि यह नाम पहले एक उपनाम के रूप में, या शायद मज़ाक उड़ाने के लिए दिया गया हो। लेकिन इसमें एक गहरी सच्चाई छिपी थी: उनकी पहचान यीशु मसीह से जुड़ी थी।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ पतरस को उन मसीहीयों के सामने जवाब देना पड़ा जो गैर-यहूदियों के साथ उसके मेल-जोल पर आपत्ति जता रहे थे। जब ख़ुदा कोई नया काम करता है, तब क्या आप अपनी सोच को बदलकर उसके साथ बने के लिए तैयार हैं?

२ क्या आप ख़ुदा के फ़ज़्ल को पहचान पाते हैं जब वह आपके आराम के दायरे से बाहर ज़ाहिर होता है? और क्या आप उसके साथ आगे बढ़ने का साहस रखते हैं?

३ बरनबास ने पौलुस को भी साथ बुलाया ताकि वे मिलकर सिखा सकें। क्या आप दूसरों को भी मौक़ा देने और साथ मिलकर सेवा करने के लिए तैयार हैं?

दुआ: *"ऐ ख़ुदावंद, तेरा शुक्रिया कि तू रिश्ता-पसंद ख़ुदा है, जो लोगों का खुले बाँहों से स्वागत करता है। हमें भी ऐसा फ़ज़्ल और मोहब्बत अता कर कि हम दूसरों का उसी तरह स्वागत करें जैसे तू हमारा करता है। आमीन।"*

१२ नामुमक़िन दुआ

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १२

राजा हेरोद ने कलीसिया के ख़िलाफ़ एक सुनियोजित हमला शुरू किया। याक़ूब को मार डाला गया और पतरस को क़ैदखाने में डाल दिया गया। हालात बेहद भयानक हो चुके थे।

कलीसिया जो कर सकती थी, उन्होंने वही किया, उन्होंने पूरे मन से दुआ की। इस बीच पतरस दो सैनिकों के बीच जंजीरों में जकड़ा हुआ था और कड़ी निगरानी में रखा गया था। इंसानी नज़रिए से देखा जाए तो उसका बच निकलना नामुमक़िन था। लेकिन आधी रात को एक फ़रिश्ता प्रकट हुआ। जंजीरें टूटकर गिर गईं, दरवाज़े अपने आप खुल गए और पतरस ऐसे बाहर निकल गया मानो वहाँ कोई दरवाज़ें ही नहीं थे।

उसके बाद क्या हुआ, यह चमत्कार की बात थी। जब वह उस घर के दरवाज़े पर पहुँचा जहाँ मसीही दुआ कर रहे थे और उसने दरवाज़ें पर दस्तक दी, तो पहले तो उन्होंने यक़ीन ही नहीं किया कि सचमुच पतरस बाहर खड़ा है। वे उसकी आज़ादी के लिए दुआ तो कर रहे थे, लेकिन जब ख़ुदा ने हक़ीक़त में दुआ का जवाब दिया, तो वे खुल आश्चर्यचकित रह गए।

यह अध्याय कुछ अजीब-सा लगता है: याक़ूब को रिहाई नहीं मिली, लेकिन पतरस को मिल गई। क्यों? इसका जवाब हमें नहीं दिया गया। यह एक राज़ ही बना रहता है। **ख़ुदा के तरीके और उसकी योजनाएँ हमेशा हमारी समझ में नहीं आतीं।** लेकिन एक बात बिल्कुल स्पष्ट है: दुआ सिर्फ़ आख़री सहारा नहीं, बल्कि ख़ुदा की योजना में एक बेहद ताक़तवर ज़रिया है।

अध्याय के अंत में हम पढ़ते हैं: “बल्कि ख़ुदा का कलाम बढ़ता और फैलता गया।” (प्रेरितों के काम १२:२४) दुनिया का कोई भी राजा उसे रोक नहीं सकता। प्रेरितों के काम अध्याय १२ हमें सिखाता है कि जब सभी दरवाज़े बंद दिखाई देते हैं, तब भी ख़ुदा सीमित नहीं होता। और दुआ के ज़रिए वह उन बातों को भी मुमक़िन कर सकता है जो हमारे लिए नामुमक़िन होती हैं।

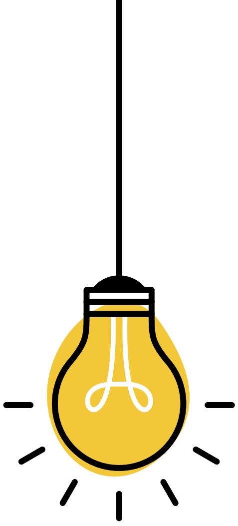

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ याक़ूब को मार दिया गया, जबकि पतरस को आज़ाद कर दिया गया। जब नतीजा आपकी उम्मीदों से अलग हों, तब भी क्या आप ख़ुदा पर भरोसा बनाए रख सकते हैं?

२ पतरस कड़ी पहरेदारी में दो सैनिकों के बीच सो रहा था। जब आप किसी मुश्किल हालात में फँसे हुए महसूस करते हैं, तब आपको सुक़ून कहाँ से मिलता है?

३ कलीसिया पूरे जोश से दुआ कर रही थी, लेकिन जब पतरस सचमुच दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ, तो वे हैरान रह गए। जब आप दुआ करते हैं, तो क्या आप सचमुच उम्मीद रखते हैं कि ख़ुदा दख़लअंदाज़ी करेगा?

दुआ: *"ऐ ख़ुदा, जब हम अपने आप को फँसा हुआ और बंद दरवाज़ों के पीछे महसूस करते हैं, तब हमें याद दिला कि तू पतरस का, टूटी हुई ज़ंजीरों का, खुले हुए फाटकों का और नई आज़ादी देने वाला ख़ुदा है। आमीन।"*

१३ इबादत के साथ शुरू करें

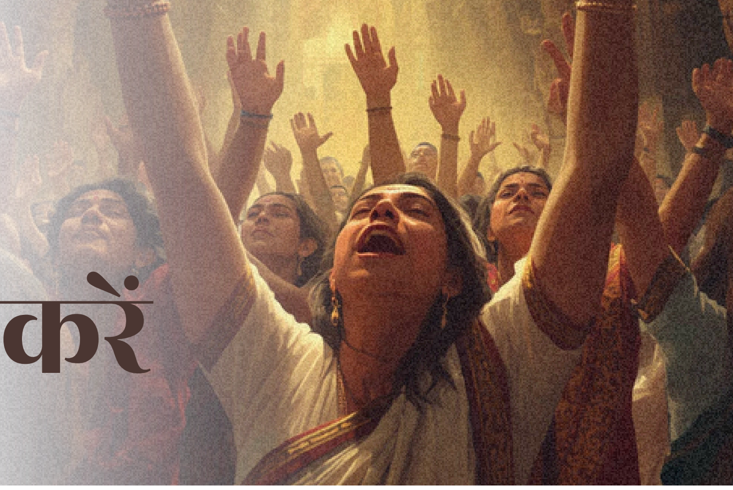

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १३

अन्ताकिया में एक बढ़ती हुई कलीसिया स्थापित हो चुकी थी। नबी और शिक्षक मिलकर सेवा कर रहे थे। जब वे उपवास रखकर और ख़ुदा की इबादत कर रहे थे, तब पवित्र आत्मा ने कहा: “बरनबास और शाऊल को उस ख़ास काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।” (प्रेरितों के काम १३:२) **यहीं से उस ख़ास कार्य की शुरूआत होती है, किसी रणनीति या योजना से नहीं, बल्कि इबादत से।**

कलीसिया ने बरनबास और शाऊल पर हाथ रखकर उनके लिए दुआ की और उन्हें रवाना किया। इसी के साथ इतिहास का पहला मिशनरी सफ़र शुरू हुआ। साइप्रस और बाद में पिसिदिया में उन्होंने यीशु मसीह का प्रचार किया और बताया कि वह इस्राएल से किए गए ख़ुदा के वादों की पूर्णता हैं। कुछ लोगों ने यह संदेश ख़ुशी से स्वीकार किया, जबकि दूसरों ने जलन और विरोध दिखाया।

तब पौलुस एक अहम वाक्य कहता हैं: “अब हम गैर-यहूदियों की ओर रुख़ करते हैं।” (प्रेरितों के काम १३:४६) **सुसमाचार सिर्फ़ कुछ लोगों के समूह तक सीमित नहीं है। जो कभी अब्राहम से वादा किया गया था, कि सभी जातियाँ उसके द्वारा बरक़त पाएँगी, अब स्पष्ट रूप से पूरा होते हुए दिखाई देने लगा था।**

प्रेरितों के काम अध्याय १३ हमें सिखाता है कि कलीसिया सिर्फ़ इकट्ठा होने के लिए नहीं, बल्कि ख़ुदा के ख़ास कार्य के प्रति भेजने के लिए भी है। पवित्र आत्मा बुलाता है, कलीसिया उस बुलाहट को पक्का करती है और लोग फ़रमाबरदारी में आगे बढ़ते हैं। जब आप “मिशन” शब्द सुनते हैं, तो शायद आपके मन में दूर-दराज़ देशों की तस्वीर आती होगी। लेकिन अपने असल मायने में मिशन का मतलब है, जहाँ भी ख़ुदा आपको रखे, वहाँ उसके काम के लिए हाज़िर रहना।

ख़ुदा लोगों को भेजता है। ख़ुदा आपको भी भेजता है। सवाल यह है: क्या आप जाने के लिए राज़ी हैं?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप ख़ुदा की बुलाहट के लिए हाज़िर रहते हैं, या आप अपने ही इरादों को पहला स्थान देते हैं?

२ कौन-सी बातें आपको ख़ुदा के लिए पूरी तरह हाज़िर होने से रोक रही हैं?

३ जब रूहानी विरोध का सामना होता है, तो आपका जवाब क्या होता है?

दुआ: ***"ऐ ख़ुदा, हमारे आसमानी पिता, तेरी मोहब्बत हर दिल तक पहुँचना चाहती है। हमें तैयार कर कि जहाँ कहीं भी हम जाएँ, वहाँ तेरी मोहब्बत और तेरे फ़ज़्ल का पैग़ाम सुनाएँ। यीशु मसीह के नाम में। आमीन।"***

१४ इज़्ज़त और बे-ईज़्ज़ती

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १४

पौलुस और बरनबास आगे बढ़े और सबसे पहले आराधनालय में गए। अन्ताकिया में हुए सताव ने उनके साहस और सुसमाचार सुनाने के जोश को कम नहीं किया था। **वे इस तरह बोलते थे कि कई यहूदी और गैर-यहूदी मसीही ईमान में दाख़िल हो जाते थे।** लेकिन साथ ही विभाजन भी हो जाता था। ख़ुदा ने पौलुस और बरनबास को चमत्कार करने की ताक़त दी थी।

लुस्त्रा में पौलुस ने एक लकवे के मारे हुए इंसान को चंगा किया। लोगों की प्रतिक्रिया हैरान कर देने वाली थी। भीड़ ने सोचा कि ख़ुदा इंसान के रूप में उनके बीच उतर आया हैं। वे पौलुस और बरनबास की इबादत करने तक को तैयार हो गए। लेकिन थोड़ी ही देर बाद माहौल पूरी तरह बदल गया। विरोधियों ने भीड़ को भड़का दिया और उसी भीड़ ने पौलुस पर पथराव किया और उसे मरा हुआ समझकर शहर के बाहर फेंक दिया।

एक ही अध्याय में इज्ज़त से निंदा तक का सफ़र दिखाई देता है।

फ़िर भी पौलुस उठ खड़ा हुआ और उसने अपना काम जारी रखा। बाद में वह उन्हीं जगहों पर लौटता है जहाँ उसका विरोध हुआ था, ताकि चेलों को हिम्मत दे सके। उसका पैग़ाम हक़ीक़ी था: "लाज़िम है कि हम कई मुसीबतों में से गुज़रकर ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल हों।" (प्रेरितों के काम १४:२२)

यह कोई मशहुर पैग़ाम नहीं था, लेकिन सच्चा था। सफ़लता और ग़म कई बार एक-दूसरे के बहुत क़रीब होते हैं। यीशु मसीह के प्रति वफ़ादार रहने का मतलब यह नहीं कि ज़िंदगी हमेशा आसान होगी। **लेकिन ख़ुदा की बादशाहत मुश्किल हालातों के बीच भी बढ़ती रहती है।**

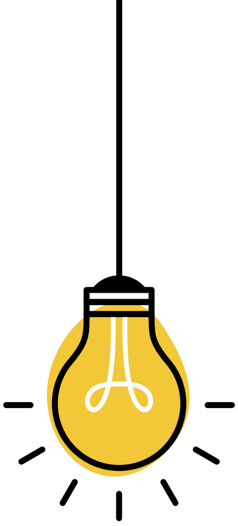

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ जब लोग आपकी सराहना करते हैं, तो क्या आप विनम्र बने रहते हैं? अगर हाँ, तो कैसे?

२ जब लोग आपका इनकार करते हैं, तब भी क्या आप वफ़ादार बने रहते हैं? अगर हाँ, तो कैसे?

३ क्या आप उम्मीद करते हैं कि ईमान ज़िंदगी को आसान बना देगा, या फ़िर मुश्किल हालातों में भी आप ख़ुदा पर भरोसा रखते हैं?

४ आज आपकी ज़िंदगी के किन क्षेत्रों में ख़ुदा आपसे सब्र और दृढ़ता बनाए रखने के लिए कह रहा है?

दुआ: *"ऐ ख़ुदावंद, मेरी मदद कर कि मैं आज़माइशों में मज़बूती से क़ायम रहूँ। मुझे सब्र के साथ चलना सिखा, उम्मीद के साथ जीना सिखा, मुश्किल हालातों में तेरे इंतज़ार में ठहरना सिखा और दुआ में वफ़ादार बने रहने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।"*

१८ उसूलों से बढ़कर, रहमत।

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १५

अन्यजातियों में बढ़ती हुई मसीहीयों की संख्या प्रेरितों के काम की क़िताब में एक अहम सवाल खड़ा करती है: क्या गैर-यहूदी विश्वासियों को यहूदी व्यवस्था का पालन करना चाहिए, जिसमें ख़तना भी शामिल है?

इस विषय पर गहरी बहस होती है। **क्या उद्धार सिर्फ़ फ़ज़्ल से मिलता है, या फ़ज़्ल के साथ धार्मिक क़ानूनों का पालन भी ज़रूरी है?**

यरूशलेम में प्रेरित और बुज़ुर्ग इकट्ठा होते हैं। पतरस उन्हें याद दिलाता है कि ख़ुदा ने अन्यजातियों को भी बिना किसी भेदभाव के पवित्र आत्मा दिया। "तुम क्यों ख़ुदा की परीक्षा लेते हो और उन लोगों के गले में ऐसा जूआ रखना चाहते हो, जिसे न हम और न हमारे पूर्वज उठा सके?" (प्रेरितों के काम १५:१०) याक़ूब भी पक्का करता है कि यह बात नबियों की शिक्षाओं के अनुसार है।

नतीजा साफ़ दिखता है: उद्धार यीशु मसीह के फ़ज़्ल से मिलता है, बिना किसी इज़ाफ़ी शर्त के। एकता बनाए रखने के लिए कुछ व्यावहारिक निर्देश दिए गए, लेकिन आधार फ़ज़्ल ही रहा।

प्रेरितों के काम अध्याय १५ सुसमाचार की बुनियादी सिख की हिफ़ाज़त करता है। जैसे ही हम ख़ुदा की नज़र में क़बूल किए जाने के लिए फ़ज़्ल के साथ अपनी शर्तें जोड़ने लगते हैं, हम मसीह में मिली आज़ादी को खो बैठते हैं।

आज भी हम अनजाने में अपने लिए और दूसरों के लिए नए "क़ानून" बना लेते हैं, सांस्कृतिक उम्मीदें, अनकहे उसूल और धार्मिक रीतिरिवाज़। सवाल यह है: **क्या हम आज भी वाक़ई फ़ज़्ल के सहारे ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं?**

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप सुसमाचार के असली संदेश और इंसानी रिवाज़ों के बीच फ़र्क़ कर सकते हैं?

२ क्या आपको यक़ीन है कि ख़ुदा का फ़ज़्ल ही आपके लिए काफ़ी है, या फ़िर सोचते हैं कि उसकी मंज़ूरी पाने के लिए नेक काम करने की ज़रूरत है?

३ किन क्षेत्रों में कानूनपरस्ती मसीह में मिलने वाली आपकी ख़ुशी को कमज़ोर कर सकती है?

४ आप किस तरीक़े से समाज में योगदान दे सकते हैं, ताकि वह सच्चाई और फ़ज़्ल में दृढ़ता से क़ायम रहे?

दुआ: *"ऐ पाक ख़ुदा, मुझे सिखा कि मेरी आँखें तेरे फ़ज़्ल पर लगी रहें। जहाँ कानूनपरस्ती तेरी रहमत पर हावी होने लगें, वहाँ तेरे फ़ज़्ल को प्रबल होने के लिए मदद कर। आमीन।"*

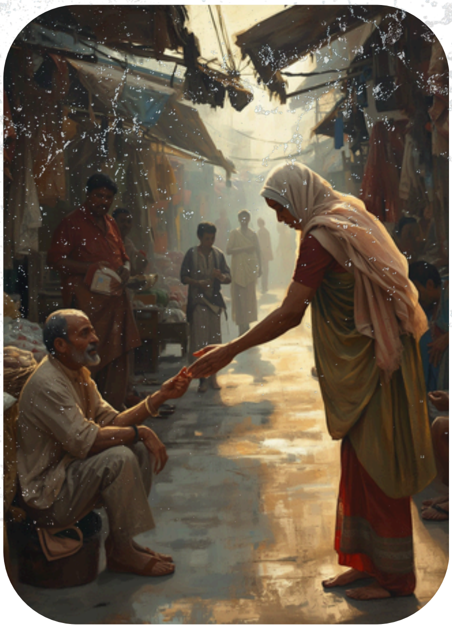

१६ “आओ और मदद करो!”

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १६

पौलुस अपनी दूसरे मिशनरी सफ़र पर निकलता है और तीमुथियुस उसके साथ जुड़ जाता है। वह जवान है, लेकिन समर्पित है। वे दोनों उन नगरों में जाते हैं जहाँ पहले से कलीसियाएँ स्थापित की जा चुकी थीं। उनके लिए यह ख़ुदा के काम का मुनासिब विस्तार था।

लेकिन फ़िर एक हैरान कर देनेवाली बात होती है। पवित्र आत्मा उन्हें कुछ क्षेत्रों में जाकर कलाम सुनाने से रोक देता है। दो बार उनकी योजनाएँ रुक जाती हैं। कोई वजह नहीं बताई जाती, कोई खुलासा नहीं दिया जाता। बस पैग़ाम इतना है: “यहाँ नहीं।”

फिर एक रात पौलुस को एक दर्शन मिलता है। मकिदुनिया का एक शख़्स ज़ोर से कहता है: “मकिदुनिया में आकर हमारी मदद करो।” (प्रेरितों के काम १६:९) यहीं से रास्ता साफ़ हो जाता है। जो दरवाज़ा पहले बंद नज़र आ रहा था, वही आगे चलकर यूरोप की ओर खुलने वाला रास्ता बनता है। लेकिन उससे पहले उन्हें फिलिप्पी जाना था।

फिलिप्पी में उनकी मुलाक़ात लुदिया से होती है, जो एक व्यापार करने वाली स्त्री थी। फ़िर पौलुस एक लड़की को जो दासी थी, उसे दुष्ट आत्मा से आज़ाद करता है। इसी वजह से पौलुस और सीलास को जेल में डाल दिया जाता है। लेकिन जेल में भी, आधी रात के समय, वे ख़ुदा की इबादत करतें हैं। फ़िर एक भूकंप आता है, जेल के दरवाज़े खुल जाते हैं और जेलर यह सब देखकर पौलुस के द्वारा मसीही ईमान में आता है। एक ही अध्याय। तीन बिल्कुल अलग-अलग लोग। एक ही सुसमाचार।

ख़ुदा की अगुवाई कई बार सीधे रास्तों से नहीं, बल्कि घुमावदार रास्तों के ज़रिए आती है। बंद दरवाज़े असफ़लता की निशानी नहीं होते, बल्कि वे दिशा-संकेत होते हैं।

शायद आप भी समझ नहीं पातें की कुछ बातें आगे क्यों नहीं बढ़ रही हैं या ये रुकावटें क्यों आ रही हैं। लेकिन यह याद रखें: ख़ुदा सिर्फ़ “हाँ” में ही नहीं, बल्कि “नहीं” में भी काम कर रहा होता है।

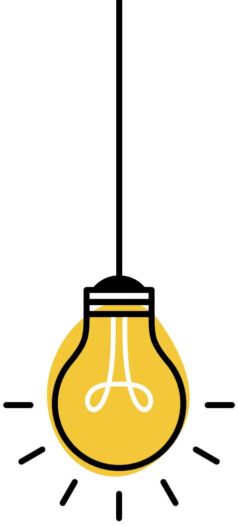

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ जब फ़रमाबरदारी सफ़लता के बजाय परेशानियों की ओर ले जाती हैं, तब आपका जवाब क्या होता है?

२ क्या आपकी ख़ुशी आज़ादी पर निर्भर करती है, या फ़िर ख़ुदा की मौजूदगी पर?

३ पीछे मुड़कर देखने पर, क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे मौके दिखाई देते हैं जहाँ एक बंद दरवाज़ा आख़िरकार आपको किसी बेहतर चीज़ की तरफ़ ले गया?

दुआ: *"ऐ पाक ख़ुदा, मुझे सिखा कि मैं अपनी ज़िंदगी में तेरी रूह की अगुवाई पाने के लिए तैयार रहूँ। खुले दरवाज़ों के ज़रिए या बंद दरवाज़ों के ज़रिए, मुझे तेरी मर्ज़ी को समझकर चलने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।"*

१७ यीशु मसीह के बारे में साफ़ समझ।

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १७

थिस्सलुनीके और बिरीया में हम सुसमाचार के प्रति दो तरह के रवैये देखते हैं: विरोध और तहक़ीक़। कुछ लोग ग़ुस्सा हो जाते हैं, जबकि कुछ लोग रोज़ाना पाक कलाम की जाँच-पड़ताल करने लगते हैं कि क्या पौलुस जो कह रहा है, वह सच है।

फ़िर पौलुस एथेंस पहुँचता है, जो विरोध और तहज़ीब का एक बड़ा मरकज़ था। वह हर तरफ़ वेदियाँ और मूर्तियाँ देखता है। उसका ज़हन कार्यशील हो जाता है। लेकिन वह नफ़रत से जवाब नहीं देता। **वह लोगों के साथ बातचीत करने में मशगुल हो जाता है।**

अरियुपगुस में वह उस “अनजान ख़ुदा” के बारे में बोलता है जिसकी वे इबादत करते थे। वह उनकी सोच और नज़रिए को समझते हुए, यहाँ तक कि उनके शायरों के कथन भी बोलता है, लेकिन संदेश के मूल सच्चाई से भटकता नहीं: ख़ुदा सृष्टिकर्ता है, कोई मूर्ति या प्रतिमा नहीं। वह लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाता है, क्योंकि ख़ुदा ने न्याय का एक दिन ठहराया है और यह न्याय उस शख़्स के द्वारा होगा जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया।

पुनरुत्थान फ़िर भी एक निर्णायक मुद्दा बना रहा। कुछ लोग मज़ाक उड़ाते थे, कुछ और सुनना चाहते थे और कुछ मसीही ईमान में शामिल हो गए।

प्रेरितों के काम अध्याय १७ हमें दिखाता है कि सुसमाचार तहज़ीब से अलग नहीं है, लेकिन उसकी पहचान भी तहज़ीब से तय नहीं होती। लोगों से जुड़ने के लिए बुद्धिमान होना चाहिए, मगर संदेश को कमज़ोर या बदले बिना।

हम भी आज ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ तरह-तरह के ख़यालात और मान्यताएँ मौजूद हैं। सवाल यह है: क्या हमें इसके बारे में पता है? और क्या हम यीशु मसीह के बारे में साफ़ समझ रखते हैं?

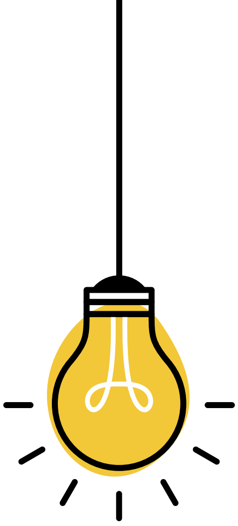

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप अपने आसपास की तहज़ीब को इतना समझते हैं कि सुसमाचार लोगों तक आसान अंदाज़ में पहुँचा सकें?

२ आप उन लोगों से कैसे पेश आते हैं जिनका ईमान आपके ईमान से अलग है?

३ यीशु मसीह की गवाही तब असरदार होती है, जब आप उसे अच्छी तरह जानते हैं। क्या आप रोज़ाना बाइबल पढ़ते हैं और उस पर ग़ौर करते हैं?

क्या आपको बाइबल पढ़ने में मदद चाहिए?

दुआ: *"ऐ ख़ुदावंद, मेरी मदद कर कि मैं तेरी तलाश करने वालों के लिए तेरा गवाह बन सकूँ। मुझे मदद कर, ताकि मैं सांस्कृतिक मान्यताओं और तुझ पर ईमान के बीच एक सही रास्ता बन सकूँ। आमीन।"*

हमें ऑनलाइन सुसमाचार बाँटने में मदद करें।

प्रेरितों के काम की क़िताब में हम देखते हैं कि सुसमाचार साधारण लोगों के ज़रिए पूरी दुनिया में फ़ैलता है। ख़ुदा उनके मौजूद होने, उनके वक़्त और उनके साधनों का इस्तेमाल करता है ताकि उसके राज्य का सुसमाचार दुनिया के हर कोने तक पहुँचे। और वह आज भी यही कर रहा है।

Jesus.net का मक़सद, आप लोगों तक सुसमाचार पहुँचाना है, ठीक वहीं जहाँ आप हैं: ऑनलाइन।

अलग-अलग तरीकों से हम हर संस्कृति के लोगों को यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए न्योता देते हैं।

दुआ, समय या आर्थिक सहयोग के द्वारा आप भी इस मिशन का हिस्सा बन सकते हैं। आइए, मिलकर सुसमाचार की गूँज दुनिया के हर कोने तक पहुँचाएँ!

अभी आर्थिक मदद करें

१८ मिलकर बनाएं।

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १८

कुरुन्थियुस में पौलुस की मुलाक़ात अक्विला और प्रिस्किल्ला से होती है। वे दोनों एक ही पेशे से जुड़े थे और वे तंबू बनाने का काम मिलकर करते थे। पौलुस की सेवकाई उसके रोज़ाना ज़िंदगी से अलग नहीं थी। **दोनों का काम और मिशन एक-दूसरे से जुड़ा हुआ था।**

आराधनालय में विरोध बढ़ता गया, लेकिन नए मसीहीयों की संख्या भी बढ़ती गई। यहाँ तक कि आराधनालय का एक अगुवा, क्रिस्पुस, भी मसीही ईमान में आ गया था। तब ख़ुदा ने एक दर्शन में पौलुस को प्रोत्साहित किया: "डर मत ... क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ।" (प्रेरितों के काम १८:९-१०)

यह वादा बहुत अहम है। ख़ुदा की मौजूदगी ही सब्र की बुनियाद है।

बाद में हम देखते हैं कि अक्विला और प्रिस्किल्ला, अपुल्लोस को सिखातें हैं। वह बड़े जोश के साथ बोलता था, लेकिन अभी तक सुसमाचार को पूरी तरह नहीं समझता था। उसे सबके सामने सुधारने के बजाय, वे उसे वहाँ से अलग जगह ले गए और उन्होंने उसे ख़ुदा के मार्ग को बेहतर तरीक़े से समझाया।

प्रेरितों के काम अध्याय १८ हमें यह सिखाता है कि ख़ुदा का राज्य साथ में काम करने से आगे बढ़ता है। प्रेरित, व्यवसायी, शिक्षक और नए मसीही, हर किसी की एक अहम भूमिका है।

कोई भी शख़्स अकेले कलीसिया का निर्माण नहीं कर सकता।

शायद हम पूरे कार्य में अपनी भूमिका को कम समझतें होंगे। लेकिन ख़ुदा का काम उन लोगों के ज़रिए बढ़ता है जो वफ़ादारी के साथ मिलकर काम करते हैं, एक-दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं और एक-दूसरे को बेहतर बनने में मदद करते हैं।

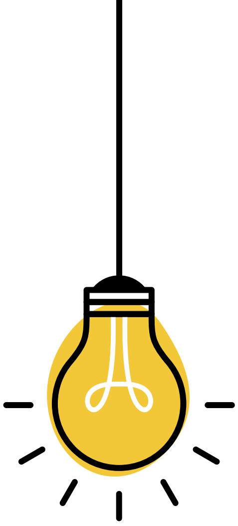

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप अपने रोज़ाना के कार्य को ख़ुदा के मिशन का हिस्सा मानते हैं?

२ क्या मैं साथ मिलकर काम करता हूँ, या फ़िर मैं सब कुछ अकेले ही संभालने की कोशिश करता हूँ?

३ क्या मुझे तब भी वफ़ादार रहना चाहिए जब काम साधारण और अनदेखा सा लगने लगे?

दुआ: *"ऐ आसमानी पिता, मेरी मदद कर कि मैं दृढ़ रहूँ और ईमान में बना रहूँ, भले ही मिशन का कार्य अनदेखा और साधारण सा लगने लगे। मुझे हर दिन में तेरी पुकार को पहचानने में मदद कर। आमीन।"*

१९ परिवर्तन की ताक़त

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय १९

इफिसुस में पौलुस की मुलाक़ात कुछ ऐसे चेलों से होती है जिन्होंने यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में तो सुना था, लेकिन पवित्र आत्मा के बारे में नहीं। **जब पौलुस उन्हें यीशु मसीह के बारे में सिखाता है और उसके नाम में बपतिस्मा देता है, तो वे पवित्र आत्मा को पातें हैं।** यह दिखाता है कि ईमान का आधार पूरा सुसमाचार होना चाहिए, यीशु मसीह की मौत, पुनरुत्थान और पवित्र आत्मा का वरदान।

इसके बाद शक्तिशाली सेवकाई का एक दौर आता है। पौलुस रोज़ाना सिखाता है। चमत्कार होते हैं। यहाँ तक कि उसके छुए हुए रूमाल भी ख़ुदा के द्वारा लोगों को चंगा करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। लेकिन यह अध्याय एक साफ़ तरीक़े का विरोधाभास भी दिखाता है।

कुछ घूमने-फिरने वाले यहूदी, यीशु मसीह के नाम को एक मंत्र की तरह इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं। वे कहते हैं, “जिस यीशु मसीह का प्रचार पौलुस करता है, उसके नाम से मैं तुझे निकल जाने की आज्ञा देता हूँ।” (प्रेरितों के काम १९:१३) लेकिन वे हक़ीक़त में यीशु मसीह को जानते भी नहीं थे। तब दुष्टात्मा ने जवाब दिया, “यीशु मसीह को मैं जानता हूँ और पौलुस को भी पहचानता हूँ, पर तुम कौन हो?” (प्रेरितों के काम १९:१५) **यह स्पष्ट होता है: यीशु मसीह का नाम कोई जादुई मंत्र नहीं है।** उसके नाम की सामर्थ्य उसके साथ, रिश्ते में है।

इफिसुस में इसका गहरा असर पड़ता है। लोग अपने ग़ुनाहों को मान लेते हैं। जादू-टोने से जुड़ी महँगी क़िताबें सबके सामने जला दी जाती हैं। सुसमाचार लोगों के दिलों, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को छूता है। मूर्तियाँ और झूठे सहारे बेनक़ाब हो जाते हैं, और अशांति फ़ैल जाती है। रूहानी जागृति सिर्फ़ ऊपर-ऊपर का बदलाव नहीं है; वह सामना करती है, शुद्ध करती है और ज़िंदगी को तब्दील कर देती है।

क्या आप सुसमाचार को अपनी ज़िंदगी के उन क्षेत्रों तक पहुँचने देंगे, जहाँ आप अपनी हिफ़ाज़त, पहचान या भरोसे ख़ोज करतें हैं?

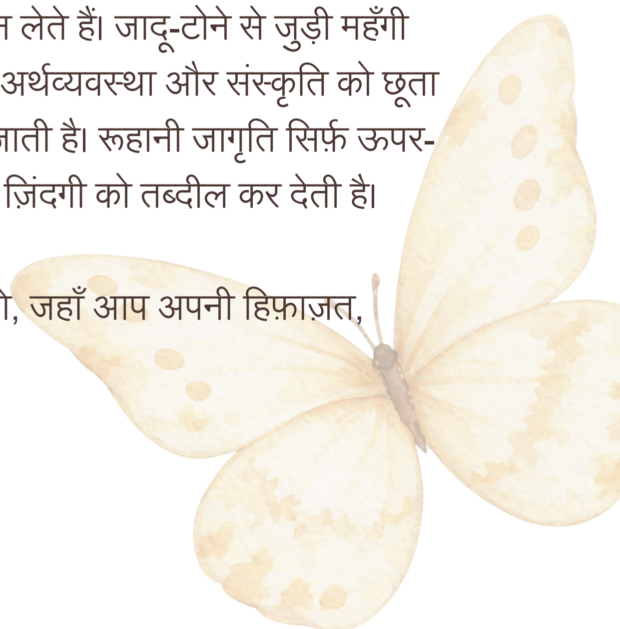

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या यीशु मसीह के साथ आपका रिश्ता व्यक्तिगत है, या आप सिर्फ़ ज़रूरत के समय ही अपने ईमान का सहारा लेते हैं?

२ क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसी चीजें हैं जिन्होंने ख़ुदा की जगह ली हैं?

३ यीशु मसीह को अपनी ज़िंदगी में पहला स्थान देने के लिए आपको किन "चीज़ों" का त्याग करना होगा?

४ अगर यीशु मसीह हक़ीक़त में आपकी ज़िंदगी का प्रभु है, तो आपके आस-पास क्या परिवर्तन दिखाई देगा?

दुआ: *“ऐ आसमानी पिता, मेरी मदद कर कि मैं हर उस चीज़ को छोड़ सकूँ जो मुझे तुझसे अलग करती है, ताकि मैं अपनी ज़िंदगी में तुझे पहला स्थान दे सकूँ। अपनी ताक़त से मेरी ज़िंदगी को इस तरह परिवर्तित कर कि उसका असर मेरे आस-पास के लोगों पर भी दिखाई दे। आमीन।”*

२०

आख़िर तक वफ़ादार

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २०

पौलुस को एहसास हो गया था कि उसकी आज़ादी का वक़्त अब ख़त्म होने वाला है। मिलेतुस में उसने इफिसुस के अगुवों को बुलाकर उनसे विदाई की बात की। पौलुस उनके साथ घुटने टेककर दुआ करता है। वे उसे गले लगाते हैं, चूमते हैं, शोक मनाते हैं और आँसू बहाते हैं। सबसे ज़्यादा उन्हें इस बात का दुःख था कि वे उसका चेहरा फ़िर कभी नहीं देख पाएँगे।

लेकिन पौलुस उन्हें डर और मायूसी में नहीं छोड़ता। वह उन्हें ख़ुदा और उसके फ़ज़्ल के वचन के हवाले करता है, जो उन्हें मज़बूत बनाने की सामर्थ्य रखता है। कलीसिया की हिफ़ाज़त आख़िर पौलुस नहीं, बल्कि ख़ुदा ख़ुद करेगा।

उसकी आख़री याद भी ज़्यादा प्रभावशाली है। उसने किसी के चाँदी या वस्त्रों का लालच नहीं किया। उसने अपने हाथों से मेहनत करके काम किया। फ़िर वह उन्हें यीशु मसीह के इन लफ़्ज़ों की याद दिलाता है: “देना, लेने से भी मुबारक़ बात है।” (प्रेरितों के काम २०:३५)

यहाँ हम रूहानी अगुवाई का मूल देखते हैं: ऐसी ज़िंदगी जो ख़ुद को दूसरों के लिए बहाल कर देती है। **न धन की लालसा, न पद की चाह, न हिफ़ाज़त की परवाह, बल्कि समर्पण, उदारता और ख़ुदा पर भरोसा।**

प्रेरितों के काम अध्याय २० हमें एक गहरा सवाल पूछने के लिए उत्साहित करता है: अगर आज हमारा आख़री दिन है, तो क्या हम कह सकते हैं कि हमने ख़ुद लिए कुछ भी नहीं रखा? हमने हमारी दौड़ ख़ुशी के साथ पूरी की?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ ख़ुदा ने आपको किन लोगों की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंपी है?

२ क्या आप दूसरों के प्रति रहमदिली दिखाने और ख़ुदा के हवाले करने के लिए तैयार हैं?

३ अगर आपको अपने आख़री दिन में भाषण करने का मौक़ा मिले, तो आप क्या कहना चाहेंगे कि लोग याद रखें?

४ पैसे और दौलत के साथ आपका रिश्ता आपकी प्राथमिकताओं के बारे में क्या ज़ाहिर करता है?

दुआ: *"ऐ ख़ुदावंद, मेरी मदद कर कि मैं कुछ भी अपने पास रोके न रखूँ। मुझे सिखा कि मैं अपनी दौड़ को ख़ुशी के साथ पूरी कर सकूँ। सिर्फ़ ख़ुद लिए नहीं, बल्कि दूसरों और तेरे लिए जीऊँ। जो कुछ तूने मुझे सौंपा है, उसमें मुझे वफ़ादार बने रहने के लिए मदद कर। आमीन।"*

२१ कष्ट उठाने के लिए तैयार

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २१

जब पौलुस यरूशलेम की ओर सफ़र कर रहा था, तो उसे कई बार सावधान किया गया था। नबियों ने उसके क़ैद होने की बात कही। उसके दोस्तों ने उससे बिनती की, कि वह वहाँ न जाए। लेकिन पौलुस ने जवाब दिया, “आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? मैं यीशु मसीह के नाम की ख़ातिर यरूशलेम में न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”(प्रेरितों के काम २१:१३)

यह लापरवाही नहीं, बल्कि अटल ईमान था। **पौलुस जानता था कि फ़रमाबरदारी, हिफ़ाज़त से ज़्यादा मायने रखती है।**

यरूशलेम में पौलुस यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। फ़िर भी अशांति फ़ैल जाती है। झूठे इल्ज़ामों की वजह से भीड़ हिंसक हो जाती है और पौलुस को गिरफ़्तार कर लिया जाता है।

एक बार फ़िर ऐसा लगता है मानो कहानी बिगड़ रही हो। लेकिन हक़ीक़त में यह रोम की ओर बढ़ रही थी, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने प्रेरितों के काम अध्याय १ में कहा था। **सुसमाचार दुनिया के हर कोने-कोने तक पहुँचेगा।**

कभी-कभी फ़रमाबरदारी आपको ठीक वहीं ले जाती है, जहाँ आप जाना नहीं चाहते। यह इसलिए नहीं कि ख़ुदा नाकाम हो गया है, बल्कि इसलिए कि उसकी राह हमारे आराम और यक़ीनी समझ की चाहत से कहीं बड़ी है। जो बात देखने वालों को नुक़सान लगती है, उसकी ख़ुदा के हाथों में तरक़्क़ी हो सकती है। जो ठहराव दिखाई देता है, वह भी उसकी योजना का हिस्सा हो सकता है।

पौलुस अपनी आज़ादी खो देता है, लेकिन सुसमाचार बाँटने में एक क़दम भी पीछे नहीं हटाता। फ़रमाबरदारी अंधेरे में लगाई गई छलांग नहीं है; यह एक भरोसेमंद ख़ुदा के हाथों में रखा गया क़दम है।

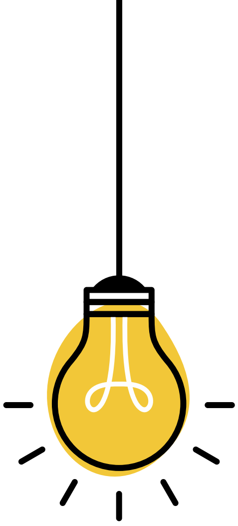

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ ख़ुदा आपसे कौन-सी ऐसी बात में फ़रमाबरदारी माँग रहा है जो आपके लिए ज़्यादा मुश्किल और क़ीमती लगती है?

२ क्या मैं फ़रमाबरदारी के लिए क़ीमत चुकाने को राज़ी हूँ?

३ क्या मैं एहतियात के मुताबिक चलता हूँ, या यक़ीन और फ़रमाबरदारी के साथ?

दुआ: *“ऐ आसमानी पिता, मुझे तेरी राहें दिखा और एक बच्चे की तरह मेरी अगुवाई कर, जो तेरे पीछे-पीछे चलता है। अगर मुझमें आगे बढ़ने का साहस कम पड़ जाए, तो मुझे तसल्ली दे, हौसला बख़्श और फ़िर से मज़बूत कर। आमीन।”*

२२
निजी गवाही

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २२

यरूशलेम में पौलुस का सामना एक ऐसी भीड़ से होता है जो उसे मार डालना चाहती थी। लेकिन छिपने या अपना बचाव करने के बजाय, **वह उन्हें अपनी कहानी सुनाता है।** वह बताता है कि कैसे वह पहले कलीसिया को सताने वाला था, फ़िर डमस्कस के रास्ते में उसकी मुलाक़ात यीशु मसीह से हुई और कैसे उसे प्रेरित होने के लिए बुलाया गया।

उसका हर एक लफ्ज़ प्रभावशाली था और ईमानदार भी। वह सिर्फ़ अपनी क़ामयाबियों को ही नहीं, बल्कि अपनी ग़लतियों की भी बात करता था। वह दिखाता है कि ख़ुदा का फ़ज़्ल इंसान की ज़िंदगी में गहरा बदलाव ला सकता है। **जो कोई यीशु मसीह से रूबरू होता है, वह पहले जैसा नहीं रह सकता।**

लेकिन जब पौलुस यह बताता है कि ख़ुदा ने उसे अन्यजातियों के पास भेजा है, तो माहौल बदल जाता है और भीड़ फ़िर उसके ख़िलाफ़ हो जाती है। **फ़ज़्ल तब तक क़बूल किया जाता है, जब तक वह हमारी बनाई हुई हदों को नहीं तोड़ता।** फ़िर भी पौलुस अपनी हिफ़ाज़त पर नहीं, बल्कि ख़ुदा पर भरोसा रखता है। उसकी गवाही असर करती है; यहाँ तक कि एक रोमी सूबेदार भी समझ जाता है कि पौलुस के साथ नाइंसाफी हो रही है और वह उसकी हिफ़ाज़त के लिए सामने आता है।

अक्सर हमारी सबसे प्रभावशाली गवाही हमारी अपनी कहानी होती है, ईमानदारी से सुनाई गई और यीशु मसीह के साथ एक सच्ची मुलाक़ात पर आधारित। यह कोई धर्मशास्त्रीय बहस नहीं, बल्कि बदली हुई ज़िंदगी की कहानी होती है।

आख़िरकार, गवाह वह नहीं जो हर सवाल का जवाब जानता हो। गवाह वह है जिसने ख़ुद कुछ अनुभव किया हो और उसके बारे में चुप न रह सके।

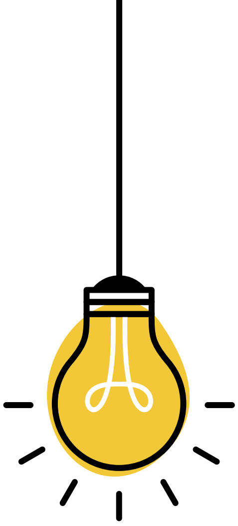

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप साफ़ तौर पर कह सकते हैं कि यीशु मसीह ने आपकी ज़िंदगी में क्या किया है?

२ ख़ुदा आपके अतीत को, आपकी ग़लतियों सहित, किस तरह इस्तेमाल करता है?

३ आज आपकी गवाही किसके लिए उम्मीद बन सकती है?

दुआ: *"ऐ आसमानी पिता, तेरा शुक्रिया कि तू हमें अपने राज्य के काम में इस्तेमाल करना चाहता है। हमारी कमज़ोरी में तू हमें मज़बूत बनाता है। मुझे हिम्मत और समझ दे कि मैं मेरी कहानी दूसरों के साथ बाँट सकूँ। मेरी गवाही को तेरे जलाल के लिए इस्तेमाल कर। आमीन।"*

२३ सोच से भी क़रीब

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २३

पौलुस फ़िर से सन्हेद्रिन (यहूदियों की सर्वोच्च धार्मिक और न्यायिक परिषद) के सामने खड़ा होता है, जहाँ वह एक बार फिर विरोधी नेताओं से घिरा होता है। बहस बढ़ जाती है, लेकिन पौलुस समझ जाता है कि फरीसियों और सदूकियों के बीच एकता नहीं है और वह उसी पर बात को मोड़ देता है। हालात तनावपूर्ण, गड़बड़ी और क़ाबू से बाहर होते जा रहें थें।

और शायद यही बात इस अध्याय को इतना मानवीय बनाती है। पौलुस कोई अछूता या मुक़म्मल अगुआ नहीं था। जब उसके साथ नाइंसाफ़ी होती है और उसे मारा जाता है, तो वह भारी जवाब देता है। यहाँ तक कि जब उसे पता चलता है कि उसने महायाजक को संबोधित किया है, तो उसे अपने लफ़्ज़ वापस लेने पड़ते हैं। पाकीज़गी मानवता को ख़त्म नहीं करती। ख़ुदा कमज़ोर और टूटे हुए लोगों के ज़रिए भी काम करता है।

हालात इतने बिगड़ जातें है कि रोमी सैनिक उसे महफ़ूज़ जगह पर ले जाते हैं। फ़िर रात में, जब शोर-शराबा थम जाता है और पौलुस अकेला होता है, ख़ुदा उसके पास आकर कहता हैं: “हिम्मत रख।” (प्रेरितों के काम २३:११)

वह कोई लंबा भाषण नहीं देता और न ही कोई नया रास्ता दिखाता है, बल्कि अपनी मौजुदगी का सुक़ून और आगे बढ़ने का साहस देता है। इसलिए मिशन जारी रहता है, ख़तरे के बीच भी।

इसी बीच, कुछ लोग पौलुस को मारने की साज़िश रचते हैं। चालीस से अधिक लोग यह क़सम खाते हैं कि जब तक पौलुस मर नहीं जाता, वे न खाएँगे न पिएँगे। लेकिन ख़ुदा उसे उसके एक भतीजे और एक रोमी सेनापति के ज़रिए बचाता है। वह उसको महफ़ूज़ रखता है।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ आज आपकी ज़िंदगी के किस क्षेत्र में आपको ख़ुदा की हौसला-अफ़ज़ाई की ज़रूरत है?

२ क्या आप भरोसा करते हैं कि ख़ुदा पर्दे के पीछे भी काम कर रहा है?

३ जब आपके साथ नाइंसाफ़ी होती है, तो आपका रवैया कैसा होता है?

४ क्या आप ख़ुदा की बड़ी योजना में सुकून पा सकते हैं, तब भी जब आपको मुसीबतों से होकर गुज़रना पड़ें?

दुआ: *“ऐ ख़ुदावंद, जब मैं डर जाऊँ तो मेरा हौसला बढ़ा। मुझे अपनी योजना की याद दिला और यह भी कि तू भला और वफ़ादार है। आमीन।”*

२४ साफ़ ज़मीर के साथ

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २४

पौलुस एक बार फ़िर मुक़दमे का सामना करता है, इस बार राज्यपाल फ़ेलिक्स के सामने। अभियोजक तरतुल्लुस बहुत चापलूसी के साथ पौलुस पर संगीन इल्ज़ाम लगाता है: मुसीबत बढ़ाने वाला, एक पंथ का अगुवा और भड़काने वाला। इल्ज़ाम बड़े थे, मगर सच्चाई बहुत कम थी।

जब पौलुस को बोलने का मौका मिलता है, तो वह आश्चर्यजनक रूप से ख़ामोश रहता है। वह झूठे इल्ज़ामों का जवाब देते हुए कहता है: “मैं हमेशा यही कोशिश करता हूँ कि मेरा ज़मीर ख़ुदा और मनुष्यों के सामने साफ़ रहे।” (प्रेरितों के काम २४:१६) पौलुस सिर्फ़ बरी होने की फ़िक्र नहीं करता, बल्कि अपना ज़मीर और सच्चाई की भी परवाह करता था। उसे अपनी एक बेदाग़ छवि बचाने की ज़रूरत नहीं थी; वह सिर्फ़ ख़ुदा के सामने एक इमानदार दिल रखना चाहता था। **वह जानता था कि आख़िर में उसे धर्मी न्यायी के सामने जवाब देना है।**

फ़ेलिक्स और उसकी पत्नी द्रुसिल्ला, यीशु मसीह पर ईमान के बारे में और सुनना चाहते थे। पौलुस उनसे रास्तबाज़ी, ख़ुद पर क़ाबू पाना और आने वाले इंसाफ़ के बारे में बात करता है। ये हल्की-फुल्की बातें नहीं थीं, बल्कि दिल को झकझोर देने वाली सच्चाइयाँ थीं। फ़ेलिक्स डर जाता है। फ़िर भी वह यीशु मसीह को अपनाने के फ़ैसले को नज़रअंदाज़ कर देता है और पौलुस से कहता है: “अभी के लिए बस इतना काफ़ी है। तुम जा सकते हो। जब मुझे मुनासिब लगेगा, तब मैं तुम्हें फ़िर बुलाऊँगा।” (प्रेरितों के काम २४:२५)

पौलुस दो सालों तक क़ैदखाने में रहा, जबकि फ़ेलिक्स समय-समय पर उससे मिलने आया करता था। वह जोशीला तो था, लेकिन समर्पण करने को राज़ी नहीं। इन दोनों के बीच कितना बड़ा फ़ासला था! **पौलुस बंधा हुआ, फ़िर भी दिल से आज़ाद था; जबकि फ़ेलिक्स ताक़तवर, फ़िर भी अंदर से क़ैद था।**

प्रेरितों के काम अध्याय २४ एक ख़ामोश लेकिन गहरा सवाल हमारे सामने रखता है: जब सच्चाई हमारे पास पहुँचती है, तो हम उसके साथ क्या करते हैं?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ आप ख़ुद को किसके साथ ज़्यादा जोड़ते हैं: पौलुस के साथ (जो बंधा हुआ, लेकिन अंदर से आज़ाद था) या फ़ेलिक्स के साथ (जो बाहर से आज़ाद, लेकिन अंदर से कैद था)?

२ क्या ऐसी कोई बातें हैं जो आपके ज़मीर पर बोझ बनी हुई हैं?

३ सहूलियत या डर की वजह से आप किस सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं?

दुआ: *"ऐ आसमानी पिता, तेरे सामने मेरा ज़मीर साफ़ बनाए रख। तेरी सच्चाई मेरी मज़बूत बुनियाद हो। मेरी मदद कर कि मैं तेरी मर्ज़ी के मुताबिक ज़िंदगी जीऊँ, ताकि मेरी ज़िंदगी दूसरों के लिए भी बरक़त की वजह बने। आमीन।"*

२८ भरोसा बनाए रखें

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २५

पौलुस को जेल में दो साल बीत जाते हैं। इसके बाद फ़ेलिक्स की जगह फेस्तुस नया हाकिम बनता है। यहूदी रहनुमा फेस्तुस से गुज़ारिश करता हैं कि पौलुस को यरूशलेम भेज दिया जाए, क्योंकि वे रास्ते में उस पर घात लगाकर उसका क़त्ल करना चाहते थे।

लूका लिखता है कि फेस्तुस "यहूदियों को ख़ुश करना चाहता था।" (प्रेरितों के काम २५:९) पहली नज़र में यह बात मासूम-सी लगती है, लेकिन इन अल्फ़ाज़ के पीछे एक गहरा तनाव छिपा है। रोमी हाकिम होने के नाते फेस्तुस की ज़िम्मेदारी थी कि यहूदिया में अमन बनाए रखे। वह जानता था कि पौलुस पर लगाए गए इल्ज़ाम कमज़ोर हैं और हक़ीक़त में वह बेक़सूर था। फ़िर भी उसके ज़हन में उसे यरूशलेम भेजने का ख़याल क्यों आता है? शायद इसलिए कि उसके लिए सियासी सुकून, इंसाफ़ से ज़्यादा अहम था।

फेस्तुस का मज़ाक उडाना बहुत आसान है। लेकिन क्या हम भी कई बार सच्चाई के बजाय सबको ख़ुश रखने की कोशिश नहीं करते? कितनी बार हम मतभेद या लड़ाई से बचने के लिए अपने पक्के यक़ीन को नज़रअंदाज़ कर लेते हैं?

पौलुस इस मसले का हिस्सा बनने से इनकार कर देता है। उसके ख़िलाफ़ इल्ज़ाम तो संजीदा थे, लेकिन साबित नहीं हुए थे। इसलिए वह सम्राट के सामने अपील करने का फ़ैसला करता है। ऐसा करके वह न केवल अपनी जान बचाता है, बल्कि नतीजे को पूरी तरह से बिना समझे, ख़ुदा के उस वादे की ओर भी बढ़ता है कि वह रोम में उसकी गवाही देगा।

कई साल पहले ख़ुदा ने कहा था कि पौलुस रोम में उसकी गवाही देगा। पौलुस के लिए जो रास्ता एक मजबूरी और बच निकलने का ज़रिया लगता था, वही ख़ुदा के वायदे के पूरा होने की ओर बढ़ने वाला एक अहम क़दम बन जाता है।

हम इसके ज़रिए क्या सीखते हैं? ख़ुदा का मंसूबा इंसानी ताक़त, सियासी चालों या सत्ता के खेलों से कभी नाकाम नहीं होता। वह एक मुक़दमे को मंज़िल तक पहुँचने का रास्ता बना देता है और देरी को अपनी योजना की तैयारी में बदल देता है।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आपको कभी इंसानी ताक़त के खेलों का सामना करना पड़ा है?

२ आप निजी, सियासी या समाज के दबावों का सामना कैसे करते हैं?

३ क्या आप यक़ीन करते हैं कि ख़ुदा अपने मंसूबे को पूरा करने के लिए पेचीदा हालात और मुश्किल हालातों के ज़रिए भी काम करता है?

दुआ: *"ऐ आसमानी पिता, तेरा शुक्रिया, कि इंसानों की साज़िशें तेरे मंसूबे को कभी नाकाम नहीं कर सकतीं। तेरा शुक्रिया कि तू टेढ़े-मेढ़े रास्तों को भी सीधा कर सकता है। मेरी मदद कर कि मैं तेरी मर्ज़ी और तेरे मंसूबे के मुताबिक़ इंसाफ़ के रास्ते पर चलूँ। आमीन।"*

२६ सही मौक़े का इस्तेमाल करें

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २६

पौलुस को एक बार फ़िर अपना बचाव करना पड़ता है, इस बार राजा हेरोद अग्रिप्पा और फ़ेस्तुस के सामने। दो ताक़तवर हाकिम, एक ऐसा दरबार जो इख़्तियार से भरा हुआ है और उनके बीच पौलुस खड़ा है। **वह इस मौक़े का इस्तेमाल यह बताने के लिए करता है कि ख़ुदा ने उसकी ज़िंदगी में क्या किया है।**

पौलुस अपनी कहानी सुनाता है, कैसे वह पहले मसीहियों पर ज़ुल्म करता था, लेकिन डमस्कस के रास्ते में उसकी मुलाक़ात यीशु मसीह से हुई और उस एक मुलाक़ात ने उसकी पूरी ज़िंदगी बदल दी। जो पहले सताने वाला था, वही अब गवाही देने वाला बन गया।

पौलुस अपने ईमान से शर्मिंदा नहीं होता। वह सच्चाई और पूरे यक़ीन के साथ बोलता है। उसका मक़सद सिर्फ़ अपना बचाव करना नहीं, बल्कि यह दिखाना है कि सुसमाचार एक सच्चाई है। यही बात राजा अग्रिप्पा के जवाब से भी साफ़ होती है: “क्या तू थोड़े ही समय में मुझे मसीही बना लेना चाहता है?” (प्रेरितों के काम २६:२८)

बहुत से लोग सोचते हैं कि यीशु मसीह की गवाही देना सिर्फ़ प्रचारकों या मिशनरियों का काम है। लेकिन पौलुस दिखाता है कि इसकी शुरुआत एक साधारण बात से होती है, यह बताने से कि ख़ुदा ने आपकी ज़िंदगी में क्या किया है।

अपनी गवाही में पौलुस तीन बातें बताता है:

- वह पहले कैसा था।
- उसकी मुलाक़ात यीशु मसीह से कैसे हुई।
- उस मुलाक़ात के बाद उसकी ज़िंदगी में क्या तब्दीली आई।

आप भी ऐसा कर सकते हैं! हो सकता है कि आपका “डमस्कस का अनुभव” उतना दिलचस्प न रहा हो, **लेकिन आपकी कहानी भी ऐसी गवाही है जिसे ख़ुदा इस्तेमाल कर सकता है।**

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ ख़ुदा ने आपकी ज़िंदगी को किन तरीक़ों से बदला है?

२ आप अपनी कहानी, गवाही किसके साथ साझा कर सकते हैं?

३ क्या आप अपने ईमान की सच्चाई को पौलुस की तरह बेझिझक बयान करने के लिए तैयार हैं? कौन-सी बात आपको रोक रही है?

दुआ: *“ऐ आसमानी पिता, तेरा शुक्रिया कि तू ज़िंदगियाँ बदलता है, जैसे तूने पौलुस की ज़िंदगी बदली। मुझे हिम्मत दे कि मैं अपने ईमान को छुपाऊँ नहीं, बल्कि दूसरों को यह बताऊँ कि तूने मेरी ज़िंदगी में क्या किया है। मुझे यह ताक़त दे कि जहाँ तूने मुझे रखा है, वहाँ मैं तेरी गवाही बन सकूँ। आमीन।”*

२७ तूफ़ान के बीच मौजूद

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २७

प्रेरितों के काम अध्याय २७ में पौलुस को एक क़ैदी के रूप में रोम ले जाया जाता है। यह सफ़र आसान नहीं था। जल्द ही जहाज़ एक ख़तरनाक तूफ़ान में फँस जाता है। यह तूफ़ान, जिसे अक्सर यूरोक्लिडन कहा जाता है, यह इतना ख़तरनाक या डरावना होता है कि कई दिनों तक न सूरज नज़र आता है, न सितारे। तूफ़ान की वजह से जहाज़ इधर-उधर हिलता रहता है और उसमें सवार लोगों की बचने की सारी उम्मीद टूटने लगती है।

इसी गड़बड़ी के बीच पौलुस खड़ा होता है। वह बताता है कि ख़ुदा के एक फ़रिश्ते ने उसे बताया था कि जहाज़ पर कोई भी नहीं मरेगा। जहाज़ टूट जाएगा, लेकिन लोग बचा लिए जाएँगे। पौलुस कहता है, “इसलिए हिम्मत रखो! क्योंकि मुझे ख़ुदा पर भरोसा है। जैसा उसने कहा है, वैसा ही होगा।” (प्रेरितों के काम २७:२५) पौलुस ख़ुद क़ैदी था, फ़िर भी वह उस जहाज़ पर उम्मीद का अगुआ बना। जहाँ तजुर्बेकार नाविक घबरा जातें हैं, वहाँ वह भरोसा दिखाता है।

हर इंसान अपनी ज़िंदगी में तूफ़ानों से गुज़रता है, बेयक़ीनी, नुक़सान, तनाव या डर के हालात। हम अक्सर दुआ करते हैं कि ख़ुदा अभी के अभी तूफ़ान को रोक दे। लेकिन इस अध्याय में हम एक अलग सच्चाई देखते हैं: **ख़ुदा सिर्फ़ तूफ़ान को थमाने वाला ही नहीं, बल्कि तूफ़ानों के बीच हमारे साथ चलता है।**

तूफ़ान तुरंत ख़त्म नहीं होता। जहाज़ टूट भी जाता है। लेकिन ख़ुदा अपना वादा पूरा करता है, सब लोग बच जाते हैं। उसकी वफ़ादारी का मतलब यह नहीं कि सब कुछ आसान हो जाए, बल्कि यह है कि वह हमें मुश्किल हालात से गुज़ारतें हुए भी महफ़ूज़ रखता है।

तो आप कैसे, पौलुस की तरह, डरने वालों के बीच उम्मीद की रोशनी बन सकते हैं?

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आप अभी अपनी ज़िंदगी में किसी तूफ़ान से गुज़र रहे हैं?

२ मुसीबत के वक़्त मैं दूसरों के लिए कौन हूँ, डर फ़ैलाने वाला या उम्मीद की रोशनी जगाने वाला?

३ ख़ुदा के कौन-से वादे मुझे मज़बूती से थामे रखते हैं?

दुआ: *“ऐ आसमानी पिता, जब मेरे आसपास के तूफ़ान की रफ़्तार बढ़ जाए, तो मुझे तुझपर भरोसा करने में मदद कर। मेरे दिल को तेरे सुकून से भर दे और मुझे यह हिम्मत दे कि मैं अपने आस-पास के लोगों के लिए उम्मीद बन सकूँ। तेरा शुक्रिया कि तूने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा है। आमीन।”*

२८ ख़ुदा आख़िर तक कार्य करता रहता है।

पढ़ें: प्रेरितों के काम अध्याय २८

जहाज़ के डूबने के बाद पौलुस और बाकी मुसाफ़िर किसी तरह तैरकर माल्टा द्वीप पर पहुँचते हैं। वहाँ के लोग उनका बहुत मेहरबानी और रहमदिली से स्वागत करते हैं और ठंड से बचाने के लिए आग जलाते हैं।

जब पौलुस आग के लिए लकड़ियाँ डाल रहा होता है, तभी एक ज़हरीला साँप उसके हाथ को काटता है। द्वीप के लोग तुरंत सोचते हैं कि यह किसी पाप या सज़ा का संकेत है। **लेकिन सबकी हैरानी के बीच पौलुस साँप को झटक देता है और उसे कोई नुकसान नहीं होता।**

बाद में इसी अध्याय में पौलुस पुबलियुस के पिता को शिफ़ा देता है और फ़िर कई बीमार लोग उसके पास लाए जाते हैं और वे भी शिफ़ा पाते हैं। **जो शुरुआत एक जहाज़ के टूटने से हुई थी, वही आगे चलकर एक ऐसा मंज़र बन जाता है जब ख़ुदा की क़ुदरत बहुत से लोगों के सामने ज़ाहिर होती है।**

ऐसा लगता है कि मुश्किलें एक के बाद एक बढ़ती ही जा रही थी, पहले तूफ़ान, फ़िर जहाज़ का टूटना और फ़िर साँप का काटना भी। ज़िंदगी में परेशानियाँ कभी-कभी लगातार आती रहती हैं। जब लगता है कि अब सबकुछ सही चल रहा है, तभी कुछ मुश्किलात सामने आ जातें है।

फ़िर भी यह अध्याय दिखाता है कि ख़ुदा का कार्य किसी तबाही पर रुकता नहीं है। जहाज़ का टूटना पौलुस के सफ़र का अंत नहीं था। यहाँ तक कि साँप का काटना भी ख़ुदा की योजना को रोक नहीं सका। जो चीज़ ख़तरा लग रही थी, वही आगे चलकर ख़ुदा की क़ुदरत दिखाने का एक मौक़ा बन गई।

ग़ौर करने के लिए कुछ अहम सवाल:

१ क्या आपने कभी किसी ऐसे मौक़े पर मेहमान-नवाज़ी या रहमदिली का अनुभव किया है, जब आपको बिल्कुल उम्मीद नहीं थी? आप उस भलाई को दूसरों तक कैसे पहुँचा सकते हैं?

२ कौन से तरीक़ों से ख़ुदा आपको दूसरों को हिम्मत देने, मदद करने और उनके लिए उम्मीद लाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है?

३ प्रेरितों के काम की क़िताब का अंत किसी साफ़ निष्कर्ष के साथ नहीं होता, पौलुस ख़ुदा की बादशाही का प्रचार करता रहता है और कहानी आगे बढ़ती रहती है। इस कहानी के बाकी हिस्से में आप कौन-सी भूमिका निभा सकते हैं?

दुआ: *“ऐ आसमानी पिता, तेरा शुक्रिया कि तेरा कार्य जारी रहता है, चाहे हालात मेरे ख़िलाफ़ ही क्यों न हों। मुझे यह सीखा कि मैं तेरें मंसूबों पर भरोसा करूँ, क्योंकि वह कभी थमतें नहीं और मेरी ज़िंदगी को इस तरह इस्तेमाल कर कि दूसरों के सामने तेरी ताक़त ज़ाहिर हो सके। आमीन।”*

हमारी ज़िंदगी में प्रेरितों के काम

प्रेरितों के काम की क़िताब यह सिखाती है कि ख़ुदा अपने इरादों को आम लोगों के ज़रिए, अपनी क़ुदरत, बुद्धिमानी और फ़ज़्ल के साथ पूरा करता है। पहले पिन्तेकुस्त से लेकर रोम में पौलुस तक, हम एक ऐसी हलचल देखते हैं जो डर, विरोध या सांस्कृतिक रुकावटों से रुकती नहीं।

ख़ुदा आम लोगों को बुलाता है कि वे बे-मिसाल तरीके से जिएँ, मुसीबत में दुआ करते हुए, गड़बड़ी में गवाही देते हुए, बटवारे में मोहब्बत दिखाते हुए और क़ीमत चाहे जो भी हो, फ़रमाबरदारी करते हुए। आपको भी! प्रेरितों के काम की क़िताब हमें बुलाहट देती है कि अपनी ज़िंदगी को ख़ुदा के इरादे की रौशनी में लाए।

प्रेरितों के काम की क़िताब सिर्फ़ एक ऐतिहासिक बयान नहीं है। यह **ख़ुदा की तरफ़ से एक अहम न्योता है**, उसकी योजना में क़दम रखने का और अपनी ज़िंदगी को पवित्र आत्मा के काम के लिए सौंप देने का।

क्या आप इस न्योता को क़ुबूल करने के लिए राज़ी हैं?

चमत्कार हर दिन

अगर प्रेरितों के काम क़िताब की कहानियाँ आपको प्रेरित करती हैं, तो ज़रा सोचिए कि इस क़िताब से हर दिन अपनी ज़िंदगी में ख़ुदा की मौजूदगी को महसूस करना कैसा होगा! जैसे चेलें पवित्र आत्मा के साथ चलते थे, वैसे ही हर दिन जीना और कार्य करना।

अगर आप हमारे रोज़ाना के प्रोत्साहन सीरीज़ "चमत्कार हर दिन" के लिए साइन अप करते हैं, तो आपको हर सुबह अपने इनबॉक्स में चमत्कार का प्रोस्ताहन देने वाला पैग़ाम मिलेगा।

एक बाइबल की आयत, एक चिंतन और एक दुआ, ताकि आप आम ज़िंदगी में भी ख़ुदा के अज़ीम कामों को देख सकें। और दुनिया में उसकी बादशाही के लिए दुआ करते रहें।

आज ही साइन अप करें और ख़ुदा की भलाई को रोज़ाना, नए अंदाज़ में अनुभव करें!

Download on the App Store

GET IT ON Google Play

जी हाँ, मुझे रोज़ाना अपने इनबॉक्स में एक प्रोत्साहन भरा पैग़ाम चाहिए।

क्या आपके पास कोई सवाल है?

बेझिझक पूछें! हमें मदद करने में खुशी होगी।

क्या आप रोजाना बाइबल से चमत्कार के प्रोस्ताहन पाना चाहते हैं?

अभी ॲप डाउनलोड करें!

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

Jesus.net